नाम [illegible] जो है चुधाकरक [illegible]
[illegible] को त्याग देती है ॥ भुजगी नाम [illegible]
[illegible] पिशि अपने प्र हे को भद्दा [illegible]
जाती है चुधापी जीत [illegible] ॥ १८ ॥ [illegible]
प्रमत्त श्रामह: श्रांत: क्रुद्धो बुभुक्षितः
लुब्धो भीरु त्वरायुक्तः कामुकश्च [illegible]
[illegible] १९ पर कदाचित भी धर्म के जानने
[illegible] नहीं होते है ॥ १९ ॥ वयसः
[illegible] संतानार्थं च मैथुनं वा कंच
[illegible] नार्थं दूगो गप पितरं ति [illegible]
[illegible] ति के वास्ते प्राण धार [illegible]
[illegible] सो जिह्वा का भोजन है ॥ [illegible]
[illegible] सो मैथुन है और स [illegible]
[illegible] जिह्वा की वा वावारणी है [illegible]
[illegible] वड म हात्मा है और स [illegible]
[illegible] को तिर जाते है ॥ २० ॥ [illegible]
[illegible] तव्यं दुर्जनेन धर्म का ते [illegible]
[illegible] तो है सः तिष्ठ [illegible]
[illegible] ॥ २१ ॥ काक हंस एक वृक्ष पर [illegible]
[illegible] सब दा [illegible] के म [illegible]
[illegible] जा को कु [illegible] नि द्रा [illegible]
[illegible] के उपर कर दइ बीट [illegible]
[illegible] जा को उपर [illegible] के [illegible]
[illegible] मार [illegible]

...या यत्किंचिन्न भासते ... हेतोः पदं ...
विकारं यत्कीर्त्यते स मनः स ज्ञातृ दा...
... तिसत्तां प्राह ॥ अथवापि यामते देव ...
... हे ...: सम्प्रतीक्षितः ॥४१॥ ज्या...
... दामा निरूपः ... ध्रुतिः दोमा
अप्रलोभ ... इति ...ऽयं धर्म ... स्याप्त
... स्मृतः ॥४२॥ अरक्षितं तेषु ति
... ह्रीतमु ... रक्षितं देव ... वि
... पति जीवत्यमायोऽपि वने विस
... तः कृतःप्रयत्नोऽपि ... नी
ति ॥४३॥ ... वत्परदारेषु परद्र
व्येषु लोष्ठवत् आत्मवत्सर्वभूतेषु यः
पश्यति स ... गद्यते ॥४४॥ आहो रबुद्धि
गणः ... क्षीणं वृद्धिस्ता सा चतुरो गो
मेऽङ्गणे (उद्योग) व्यवसायः ... कामस्त्वा यु
गणः स्मृतः ४५ ... भाषो शब्दमि ...
... त्याख्या ... दापकाः स सर्पे चेज्ज ...
वासो ... न संशयः ॥४६॥ ...
पिरूप ... तस्य नि ... सक्षितो वत
पश्यति ... मतो मे ... ख्यक ...
पातितः ... [illegible]

चोरों के आने का भय जहां न

२०

शैरि सं... तै चैव नखीनां शस्त्रपा
णीनां विश्वासो नैव कर्त्तव्यो ... राजकै
तवेषु च ॥ ४८ प्रसभं वै ... स्वजनै
स्तथापि रामो ... प्रमादः सनो
प... पतिकात्तापि पापिष्ठः सा मति
नो भवन्ति ॥ ४९ ... कुलशीलं
... ॥ ५० ... स्वाचित ... माजी
वहं ... हतो वै ... ॥ ५१
... यह है तो प... का पता करे ... ॥
... मिवे ... मि ... मि
चौ ... मि ... पाप ...
... हैव फलम ... ते ॥ ५१ ...
न ... न समानो न ... चैव ...
... विधागमः ... ॥
वर्जयेत ॥ ५२ ॥ लोकयात्रा भयं ...
... त्यागशीलता ... यत्र न
विद्यन्ते न कुर्यात तत्र संस्थितिम् ५३
तत्र ... न वसत्यपत्रना सो चैतदे
पञ्च ॥ ... दाता च वैद्य ... श्रोत्रियः
सजला नदी ५४ ... समानो ...
... तस्मात ... तद
वर्जी ... पापे ... ॥ ५५

राज्ञां कुलवंद्य विश्रामं मैत्रेयः अथ
चो [illegible] स्थान त्रयेण दृष्टे जो ते द्रमा [illegible]
श्रवण ख [illegible] ॥४४॥ स्थान [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] पा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] न पानि [illegible] का [illegible]
[illegible] ॥५६॥ [illegible]
[illegible] स्थानि [illegible] ते कि वि लो [illegible]
[illegible] नि यौवनानि [illegible] नि च [illegible]
[illegible] वाद [illegible] की [illegible] को [illegible]
[illegible] ॥ यौवन स्त्री ॥ धन ॥ [illegible]
[illegible] के समय के भोग ने [illegible] है ५७॥
[illegible] लो कृता हि साधु [illegible] का [illegible]
कृता म [illegible] चिताय न स [illegible]
कि विद्यास्पाति ॥५८ दो [illegible]
[illegible] वर्गे दो ने दया [illegible]
ते न च व [illegible] कि तस्य जीवे [illegible]
[illegible] लोके का [illegible] जीवति [illegible]
[illegible] ति वे [illegible] ॥५८॥ यो [illegible]
[illegible] य दाप ना विपत्तयः [illegible]
[illegible] विपदः स्युः [illegible] ॥६०॥
[illegible] ति [illegible] ते [illegible]

धर्मः प्रतिकासंदुराजी वः ज्ञाति सर्वत्र कर
स्तितस्तु ८८॥ गतो स्वरूपध्यानो भवो
वेश्वरजत्र: ।८ प्रभुभंचारवु माजार
वरोप्र: भः । गवि जाम्र ८ भाविजमु गज्ञो:
मुः । प्रभः रवाः शरस्ज: तस्यसमाजी नी
रव्यः श्वः वादीपकापोछी [illegible] हति प्रसपै
वार्तिकतु ८९ प्रकाकृतमुक्त्यपिपाठः ॥ प्रभु
पुषः तो नरवांगं वरत्रानवरवच्छ्र तोदकमु
केशाभ्रु स्वीवनिमीलं हति उत्पत्रिवा कर्त
मु ९० प्रकाकृतमुत्यपिपाठः ॥ प्रभिनि है
फलागवदाः श्री लक्ष्मि फलं [illegible] तादृश
त्रफलाधाराधा नैभोगफलमुधन्तु
वस्पैके स्वजा [illegible] प्राज्ञो विरुपाम पि
न्यकामु सरूपा व विरूपा चैविका
सद्रूपष्ठः ॥ ९१ ॥ प्रेसंतु [illegible]
ज्ञानच्छ: संतु प्राजागती मृजः
तोरोगणिकान प्राप्ति तेज्ञाम कि
ताः सबिपः ९२ विधा चेवा [illegible] ज्ञानाति वि
ध[illegible] नपारि भ्रमम नैहीवंधा विजा
नातिगुर्वीप्रम वावेद नामु [illegible] धवे
नहि सर्वत्र चंदन नवन्नेव नरो
रोतै न [illegible] गजे ॥

ए नृसिंन श्वपतिरूपेणतप: कोचेन नश्यति
स्वेहोदूर प्रवासेन मद्य अन्चेन नद्विजो नृप:
१० ॥ दुर्जनाः कीर्तिमेधाति सोधी मृदु
मित्राणि पूर्व तस्मात् मानादि कीर्ति माने
हि महतां धनम् ॥११॥ मानो हि ... लक्ष्मी
र्यस्य मानेम्लाने धनेन किं मेहतो मा
नहीनस्य जीवनान्मरणं वरम् ॥१२
नोकातुम्निपतेगनदुविर्जः प्राप्ते प्रिके
पुत्र तोवसंस्पर्श प्राप्य कालोनजीवति ॥१३
स्खलमापतितं स्वदुःखमापतितं प्राय
तत्परिवर्तते दुःखानि सुखानि च ॥१४॥
अपि तानि वेदवाक्यं तत्त्व मे कंमन्य
नन्जरपवद्भ्यां सखं चमेत स्यारिणः
भिक्षं भव पश्यवेदोजमश्च वास्य हि ॥१५
प्रकार: के मपातिचपावके सप्त मधु
क्षे दग्धोतास्सस्मरन्तिर्य भक्तस्यात्म
जीवति ॥१६ प्रच्छाद भवन्ति सतान्॥
११ पहतीनोकलोकभोजना ते मे के रहे
भोजनपावन हो जाता है ॥ परस्यार्थीसस्य
स्मिन्नागीह परस्यार्थी सत्स्य वाधवा परस्यार्थीस्व
प्रमाहोके परस्यार्थी: सोहिपण्डित: ॥१८
परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मन: ॥१९॥ प्रथ

परोपदेश करने में सब मनुष्यों का पाण्डित्य सहज है आप कर्म में अनुष्ठान करना की सी पुरुष महात्मा को ही होता है ॥१८॥ चेतन्य के न पाने से निन्द्य जोने वांछमान न समझो दुःख रूपी मैं देवे भावता न त्यज तो ॥ अतः चैतन्य चैतन्य का पर्व में पहुंचने मनो मन नहीं से कि शुच्यर्थ के मेरे पके में हाल न नाम ८१ ईश्वर के मन में वचन में कर्म में और ही है ताके महात्मा जो के मन में वचन में एक ही बात होती है ॥ शरीर को समा कारा हुआ नोही हट दूर अन्तः चैतन्य तत्त्वरी का कारण है है मनन से मोह सूक्ष्म ८२॥ मूढ जन तो नाति पर की त्यपदा खतेहैं और उत्तम तेरी के समान रूप वाले भाव है ही दिखते है सदा अन्तर से दुःख होते है ॥ देव राज स्त्री पापी को ते सा पर स्यतः सर्वा दार्नि भ्रष्य तेनि सत्यः पारि भ्यते परि मंगा मिवेद नापप्यते नाविता : श्रवणे की पको निते तो ल्यापारि त्यजपते ॥ ब्रुद्धि चौप ने त्यहो नि पनता सजो पदार्थ स्पर्श मु ८३ अर्थ दरि दूर से तत्त्व होती है तत्त्वज्ञ आप पुन स्पष्ट तत्त्व से छूटता है निर्वे तती तिरस्कार होता है तिरस्कार से दुःख को प्राप्त होता है दुःख से शोक होता है शोक से व्याकुल ...

होती है बुद्धि के नष्ट होने पर आपही नष्ट
हो जाता है ॥ इस वास्ते निर्धनता सम्पूर्ण
आपत्तियों का स्थान है सब दुःखों का ८५
[illegible] को ध्यान चव चैनग के पद [illegible]
[illegible] प्रसान चपर [illegible]
[illegible] प्राणत्या जोन च [illegible]
[illegible] परधना [illegible]
[illegible]
[illegible] पत्नी [illegible]
[illegible] वासु [illegible]
[illegible] का [illegible] प्राण त्या जोन
[illegible] ॥ ८५ ॥ अर्थ पर
[illegible] का [illegible] नाश्रेष्ठ है [illegible]
श्रेष्ठ नहीं है ॥ [illegible]
[illegible] श्रेष्ठ है ॥ परस्त्रीगमन श्रेष्ठ नहीं ॥ ८
हितोपदेश का श्लोक है ॥ [illegible]
[illegible] पाति [illegible] पातिव ॥
[illegible] पतन [illegible]
[illegible] रूपी ॥ ८७ ॥ [illegible]
तेस तत [illegible]
[illegible]
[illegible] भत्त हरी [illegible]

वीनां दारिंरुंचेतच्छानपाणि न लतं घनी
कुंभस्थंमुरिं वीनाः ॥८८॥ नि[illegible] वीजा
वैपिवी तिसो वधी रसाः जी वो मनं
चेयताः रूपा लसमेत्वे धर्मेक स्त्र
रेतोःतिप्रांकु मागेगता माधो मते
चिसेधिनी पन्दरताः प्रजाः पितुवेषे
कोहो केषोरव [illegible] वतेते कोलः पेष्ट
धन्या स्मृताःयेन राः ॥८९॥ तृमर्घ
हाः ॥ केतोर तेगहीनानु के विजं सि
मात चाण ोनीव न साणिका सम
रिपुः ॥९०॥ नृदृजेन सङ्का न तरु
वेतिवदु पकारे रपिपरं नमान
संसि चपुमानो पप साधवेतेन नैः
नींदिवेः चामक्षरवमेते ९१
वतरे [illegible] श्रीः प्य ज्ञ पाठको खे
तिर गौविह्वनेसर्पतः राने नि
वृत्प्रभादिक मलसेणाि तेऐ
कि थ सनकाल पराञः मखने
९२॥ वदोदीणफल चेनुतेवि
हनाः इ [illegible] सिवंगरसं

ध्वजं पतितत्तना अषेन्द्रपंमित्रिणः
सर्वे स्वार्थविरक्तेनापिरमतेव
स्थरुकोवलभेः॥८३॥ रामो
हम स्वगं नवेत्ति न हुमो वाने ष्वन कि
द्रिजान् घृतमीत चेतुष्पव माहिं सं धर्म
लोजोदत्तवान्॥८४॥ सविधानं हे यावि
इंषांक दापिनि? चारवीन्द्र
धेनापिनार्थं स्वर्णदि भूषां
कृतं सपीदो कुलोडुंनं
किं कुतोटा भवेयुः॥८५॥।

वापीकूपतडागजोपुरमठप्राकारवेदीप्रपा
वांजोपवनानि देवसदनं छिद्रं तेयेमड
पंक॥साधुत्रा॥ णयोगिनापितद्वं
पंजं प्रकुर्वन्ति येते भांदेव वरमकोपजानितो
घोरोज्वरो जायते॥१॥ वद्धा रंद्रिवोमहीमि
त्वा हचाकीटपीतका रुदच्छान्नकापिको
ऽपिध्युः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥२॥ कापि
को कृषिकारः॥ खेतीकरतेवालकरने॥ क्रोः

6

राज्ञो दद्यात् प्रयागं देवतानां च विंशति कां
दद्यात्तु विप्राणां कापि को नावसीदति ॥२॥ प्रदान
नो ऽज्ञानेभ्यः तिष्ठेत् न स्याद्दुष्कृत् कामानैः
ने ना [illegible] का च कुलोयात् न स्वपं कतिपे
तु नरकान् ॥१॥ जल [illegible] पिवेन्नां [illegible]
रापानं न प्रबोधयेत् ॥ परान्नं वाचरतीर्थं
ध पतीनं च वारयेत् ॥३॥ राजाभिषेके मदावि
[illegible] लापाः करच्युतो हेमघटस्तरुण्यां ०
सोपानमासाद्य करोति शब्दं ठं ठं ठं ठं ठं
ठं ठं ठं ठं ठं ठः ॥ ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठः ॥ इ
ति एकं पदं समस्या ॥ पश्यंति वेदैः पश्यंति
गावो गंधेन पश्यंति
पंडिताः चारैः पश्यन्ति राजानः
र्भ्यामितरे जनाः ॥१॥ स
चक्षु
मिसु प्र कुशाग्रं व म द नाचो
त पाति। कः जपं होमं च कुर्वीत
नाऽभिवाद्यो द्विजो भवेत् ॥२॥
बालं तु कुशलं पृच्छेत् [illegible] वृद्धं
मनामय [illegible] समागम्य [illegible]
मारोग्यमेव चेति ॥३॥ इति मङ्गः ॥ श्री ०॥

दे नायकेन वसात्वं नवसे [illegible] नायके ॥
स्त्रीनायकेन वसात्वं नवसे [illegible] लना
यके ॥२॥ ओत्रिपंञ भगा मगने सात्रिनं
धानिकं नदीं मातरू [illegible] यः पक्षेतू प्रा
[illegible] सप्रमच्यते ॥ [illegible] ॥ नित्यमाम
[illegible] तच्चीः नित्यं हरितं जो मपेनि
[illegible] खेच पञ्चे वा नित्यं [illegible] चेवास
सेः ॥२ दाता नीचोपि सेव्यः स्यान्निः
फलो न महानपि जलाध्यो वारिधिं
[illegible] का पश्यकू पंनिषेवते ॥१॥ [illegible]
ते प्राची पश्चात् [illegible] ति [illegible] क सारिका
[illegible] शक्नोति योवितं स [illegible] रः सञ्च
[illegible] तिः ॥१॥ कर्ण सव च [illegible] मांसं
जीवं जीमूतवाहनः ददौ दधीचिर
स्थीनि नास्ति देयं महात्मनामु ॥
दीपोपशमनं पुंसां [illegible] दनं स्त्रि
या [illegible] चिरे [illegible] कालेन [illegible] भवे
ध्रुवम् ॥१॥ प्रलये [illegible] वर्तुलाकार [illegible]
[illegible] कुदसा [illegible] निमं प्रा [illegible] तपिनवा

[illegible] यात [illegible] नचवतात [illegible] ॥१

नवीनापरवादे नरमते दुर्गे नौजेन्नै का
कः सर्व रसान् भुंक्ते विना ऽमेध्यं नत
प्यति ॥१॥ प्रमेध्यं विष्ठा॥ अभक्ष्य यदि तु
देवान् पितृन् मनुष्यांश्च भूतानि अ
धाप्य देवताः भोजपि वा ततः पश्चात्
अहं स्पां भोक्तुम् हिति ॥१॥ नकश्चिद
पि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति
प्रातः स्व करणीयानि कुर्याद् द्य
वद्धिमान् ॥१॥ शिवत्प्रपादः शुक्ला
श्का: शिवपादाच्चे नेत्राः त्रिपुण्ड्र
धारिणो ये वैते हि वैष्णव सत्तमाः ॥१०
ब्राह्मणे तिच नामः निये विशेषः परमा
त्मनः रुद्राक्षान् दधते ये वै ते हि वै
ष्णव सत्तमाः ॥ पहवाक्य वहन्नारदी
य का ध्याय के विषति रवे है" स्कंद सं
तामेनी ति रवे है यही वाक्य प्रस्तम् ॥ अथ
स्कंदपुराणे स्कंद संहितायाम् ॥ पुरा
ता च्चाप मीमांसा धर्म शास्त्रा ऽङ्ग मिति
तो वेदास्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतु
र्दश॥ पञ्चास्ति वे देन च पस्य सारा शम्भ
पुराण भारत सारग रे वा मनु चाद्य शास्त्र प्रच

न्ने चौक्ते ना नो ना स्ति नते न कार्यम् ॥

जीर्यन्ति जीर्यत: केशा: दन्ता जीर्यन्ति जी
र्यत: जीवनाशा धनाशा च जीर्यतो
ऽपि न जीर्यति ॥१ मनु० अ० ४ तस्मा
द्धर्मं सहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छनै:
॥ धर्मेण हि सहायेन तमस्तरति दुस्त
रम् ॥१॥

भागवते दशमस्कंधे पू० पूर्वार्द्धे श्लो० १३ न चा
न्तर्न बहिर्यस्येति० ॥ टीका श्रीधरी ॥ नन्व
किं तद्विपर्यय दर्शन मिश्रा प्राकृतं तत्त्व बंध
धे स्यात् ॥ कृष्णां नेति वंधो व बहिरव संवी
तं न दामा राजन्ते त पयति त वि
वेशितम् ॥ ॥ पूर्वापरं इति योजना
त: स्य पूर्वा वा र वापरं उत्तराव
धिश्च बहि व्याप्यवर्तते
स्व जगदन्त: तेन व्याप्येन दाम्ना
कथं बंधनम् ॥ न संभवतीत्यभिप्राये
णाह ॥ जगच्च य इति ॥ नाप्यकारणश
रीरामभावान्निर्बंधने ऽदं सामाना
धिकरण्यं ॥ सर्वस्य जगत्कारणत्वा
दमकोऽत्रे नन्त शरीर त्वाचैत
न

... वस्तु साधनं वंधनं न सं

भवति इत्यभिप्रायः ॥१३॥ ...१४

तं भवो स्जमप्यतकमिति मत्स्यपि वृत्ति

जं शुरीरं परस्य तु उत विद्य मयौ द्वा

जं केवल मात्मजं मत्वा जोषी दा...सा

धनं न उत्स्वलं वंधनो धर्म ... का

र प्राकृतं मेयं तिष्ठ तु १४ ... तो ज सो

एव व ध्य मान स्य स तः त द्वंध ना...

पातं दाम ... लो न म ... त ...

... लो ... प्र ... म भ वतु ॥ ...

लो ने न दाम्ना स ह ... द मौ त रं ... द

ध्ये ॥१५॥ यतो ... तं दाम त द पि ... न भ

भवतु ... लेवं पच ... द त स धा ... ज

ह त स वं ... न मे वा ... ॥१६॥ श्री

सर्वं ... स्थानि सर्वा ... भानि स ...

धा ... ते व ... तथापि नि ... ते ... तद

... सयंती नां जोषी नां मध्ये स्वयं वि

सितावभूव ॥१७॥ तदाद्वि ... न प्र ... द

भ ... तं जा ... पस्या: वि ... स्त क व ...

ज ... पस्या: तस्या: स्व ना तु: परि ...

...

आसीत् १८ ॥ नन्वैतावता स्वातंत्र्यभंग ॥
इत्याह एवमिति स्ववशेन स्वतंत्रे॥
स्य स्ववशत्वमेवाह यस्य वशोऽधी
नेत्र लोकश्चर स्य अहमपि दृज्जगद्
ति तेन कुत्सेन हरि सौख्यमित्यर्थः ह
रजनु भक्तवश्यतादर्शिता ॥ स वैन
स्वतंत्रोपि ऽहं भक्तेभ्य परतंत्र इति
कस्य यतुं ऽवध्यत इत्यर्थः ॥ तथा चोक्त
श्री वसुं कानि प्रता ॥ अनन्याधी
नत्वं तव कितु जगत्वैद्यक गिरः
पराधीनं चोत प्रणत परतंत्रमतं महे
तथा भागवते पि नवमस्कंधे उक्तं ॥ अहं
भक्तपराधीन ह्यस्वतंत्र इव द्विजेति ॥
१८ ननु सर्वे भक्तपरतंत्र इति गा
पीत्कं न भक्तेति कथं तस्य परतंत्रमी
श्वरस्ये त्यत्राह ॥ नेति भक्ति प्रयो
जनं हि भगवत्स्वरूपज्ञाने संवचादृशं
विज्ञते [illegible] पश्चाद्वोपसितं विधं प्रवे

श्री धरी टीका पां श्लो० २० विहिंसो भ व० श्री प्रसादं न लेभिरे इति न्या
किंतु गोपी यशोदा ध च यम् प्रसादं प्राप तत्तम ... सादं ... तत्त ... रे

स्वरूपं विमुक्तिं पदं भगवतो गोपी तेभे
न ता इष्टा अमु वनारुद्रोऽव तस्य ला श्रेव ॥
या लक्ष्मी रपि लेभिरे प्रेमपूर्व कान्त
ध्यानात्मिका हि भक्तिः सा जो च्या पवि
त्रिकेति भावः ॥२०॥ पद्य श्लोक
दो० प्रभु ता रज्जु न्यून न कंच रती इस को
उत्तर यह लिखा है और भक्ति को उ
पर ही भगवान को पद दो प्रकृति न्यून
ता दिखाई है क्यों के भक्ति ही दो प्रकार
की है ॥ एक साधन भक्ति एक फलरूप
ति: ॥ साधन रूप को जन्या साधन भक्ति
फल भक्ति सु ईश्वरकृपा जन्या ॥ प्रसं
कुशना पाद्य: भड्गका सो शील प बाल
त्या दयः प्रवृत्ति नद्यत ... इत्या
दि वचनात ॥ साधनरूप कन्ये मनः ॥ वि
वेक विद्धि वाऽभ्यास क्रिया कल्याण
ता व साध्यो ... षं साधन सप्तकः ॥
विवेको नाम जो च्या क्ष्य पवि मिश्रा दु

... ना ही का व श्रद्धे ...

विमोको नाम काम्या नभि सङ्ग ॥ ० ॥ प्रभृति
सोना म ऽ न: पुनरा लं व न म्र संशील
म्रे ॥ कृपानाम पञ्चय प्रणां धूत स्था
नादि रूपा कृपा ॥ इसवाक्य से भगवा
न का यही अभिप्राय है के दो प्रकार की भक्ति
है तिस को मे न ही लं घन कर स का तो
यह भक्त पराधी न इस वाक्य से भगवा
न भक्त के वस है इसी वास्ते दो ऽ अंग तर
के मूल कहे दुसरा काम उ ई न ज्या पंक्
र यह इस श्लोक का प्राभाय है ॥ और
माया जो है सो बी दो प्रकार का है एक आप
रा दुती या ऽ परा ॥ यह बी भगवान का ऽभि
प्राय या के मै परा ऽ परा को न ही लं घन
करता हुं इससे बी दो ई अंग तर कहे कृ
न का कौरगार ह की के मा या दो प्रकार की को
कृष्ण भगवान न ही लं घन कर सकते है ॥

तृतीय स्कंध मे वाराह ऽ वतार धारण करा
है सो नाभि क्षेत्र के उद्र को बिध कर रा
कहते है सो यह कहना उद्र का प्रसंग
है वो तो सा क्षात् ईश्वर पर प्रकार के वासे

कई जने वाराह का ध्यान धारणा कर के पृथ्वी

को हुडु के ऊपर उठायकर के तपावे हैं ॥ दे ष
रु र सर्या द्र पृथ्वी को लेकर के जल में डु
बो देता भया तब नाग जि क उ रूष यह कह
ते है के कोई बी ह चतराई तो नहीं थी जो उसको
तपावे है और के जल में जर दई और पृथ्वी
के मनुष्य के से बच रहे सो उत्तर यह है
के वोह पृथ्वी भर के जीव मनुष्य भंग के
तरस से समर च्या को प्राप्त रहे और
ऊपर बी लोक वसते थे नीचे बी जल के
पृथ्वी बी यह कुछ भग्न वत सकले से
जाते थी दैत्य बध कर ना भूमि का उद्धार क
रनो कुछ आश्चर्य नहीं है ॥ और मनु
र जी को दुरामस्कंध में दूवी दूई में कथा है प
हु कहते है के बाप वेग वाले घोडे पे र चढ़के प
र जन के कुछ को मथुरा से गोकुल में ले
लेके आये उसको शंख र सर्प का लो को
मं वेश गोकुल में कि स कारण से हुये यह
बी नाग जि के कहते है सो उत्तर यह है
के अथम तो स्नान में दो घडी प्रहर लग जाद
पापोर में भात हुये हुये भूमि को वह धोके
ऊपर हे हुये मेरे को कृष्ण दर्शन बी होगा मान
ली इस प्रकार [illegible] ते पहुंचते जे में समय रहे थे [illegible]
में काम होगा [illegible] कार [illegible] और नहीं [illegible]

भा० स्कं०२ मे यह लिखा है के ॥ एतन्मतं समाति
ष्ठपरमेण समाधिना भगवान कल्पविकल्पे
भ्रमविभूतिकं हि चित्त ॥ जब यह भगवा
न को कह दिया के तुं मोह को प्राप्त नही होगा
फेर वत्सहरण लीला मे भा० स्कं०१० वे मे
ब्रह्मा मोह को प्राप्त हो गये यह भागवत के
प्रतिज्ञा से सत्य हुवा ऐसा नास्तिक कहते है
उत्तर भगवान को तो कल्प विकल्प ऐसा सृ
ष्टि के आदि अंत मे मोह को प्राप्त नहीं होगा य
ह कहा था सो वत्सहरण मे सृष्टि का प्र
करण नहीं है वहां तो लीलारूप सो ब्रह्मा
भगवान के लीला को देखकर मोह प्राप्त
हुआ है यह उत्तर है ॥ और नास्तिक य
ह भी कहते है के ध्रुव जो स्थान लिखे
कहीं तो चांक ही र[illegible] सो उत्तर यह
है के आचार्य कवियों ने व्यासजी ने
यहां अतिशयोक्ति और उपमालंका
र दिखा है जैसे कोई कवि कहता है के ऐ
से ऐसे स्थान है जहां के [illegible] शि
खर विधुः चन्द्र[illegible] स्थान मे स्पर्श होर
ते है यथा चन्द्र[illegible] सो यह उपमा
दई है कवियों ने ॥ अलम् [illegible] ॥
और नास्तिक यह [illegible] कहते है के

ईश्वर साकार नहीं है जो ईश्वर साकार
है तो ईश्वर रचना को अनित्यमान ना प
ड़ेगा॥ इससे यह उत्तर है कि ईश्वर असम
दादिकों के वरणा शरीर रचना न हो है वो
ए तो विलक्षण अवयव विशेष से
इनमें बहुत सी श्रुति यां है [illegible]
[illegible] ॥ अदन्त तो धरती स
ए नाटक सहवं न रूप कुवचन तो श्राम् र
है और वे सहे न जाय॥ ५॥
[illegible]
[illegible] सोने से [illegible]
परमेश्वर को साकार निराकार का प्रमा
ण व॰ उ॰ मे लि॰ है॥ द्वावाव ज्ञानों रू
प मूर्तं चामूर्तं चेति॥ ईश्वर के दो रूप
एक मूर्तिमान साकार एक अमूर्ति मान
निराकार॥ एकं रूपं बहुधा यः करोति॥ इ
त्यादि वाक्यों से ईश्वर साकार मूर्तिमान है॥ अ

निर्णय

अब सध्या [redacted] ति रखते है॥ धर्मसिंधु
परिच्छेद ३ पूर्वार्द्ध पत्र ६९ सर्वे वैसस्पार
वं न ध्यादो वहिर वं प्रशस्ता ह॥ सध्या वही
रूपासिता॥ सध्या स्नानं न हो कर एण भ्रकार
वे [illegible] न कीकर सी वाहर करणो॥ काल
[illegible] ॥ और सं
सध्यी का [illegible] यह ति रवाह [illegible] ति स्पण सध्या नो सम्माहार

यात्राव ल्कमीताच्चरायाम् ॥ आचारमें षष्ठ श्रंचेप्ति ॥
नेष्ठा जपनेकर्तव्याम् द्वि जेत्रम विद सदेति वचन
संध्याकृ सध्यायां अपियाज्ञवल्क्यं लिमितचो स
थेकाच्ची ॥ संध्याकृ काल उक्तोमेरु — गो ॥ महर्ति पञ्च
काद्रू दुम विषाण्डी वीक पया पंचा प्रासन्ते इमि
ग्नि ताःवालः कष्ट्र प्रेष तर स्मृतः ॥ इनवाक्योसे उ
संध्या सिद्ध होती है मातम्मे आकृ साय उ ॥ दर्भ दीने
ल्पास संध्याप श्च्रु दान दीनो दके असरव्या तथ
पंक्ति स्पीत लह वान्निष्फल भवेत् ॥ इन वाक्य
आचारादर्श मिलिखा है ॥ ज्कप्र प्राकृति संध्या
जांचे शतगुणा स्मृता ॥ नदीजं शतसाहस्त्रां ध्रुवनंता विधि
सन्निधौ ॥ प्राकृति नाम रक्षा गुणा ॥ ज्ञ्ह्वचेक गांज
पनधानन्त्रिगुणं स्मृतम् ॥ जनं जो षट् शतगुणा मज्जा
लद शताधिकम् ॥ सिद्धि क्षेत्रे तीर्थे च देवतायां
सन्निधौ सहस्त्र शतकोटि गामन नंतं विष्णु सन्नि
धौ जप [illegible] आचारादर्श में लिखे है ॥ अ
जापत्री जपविधिः ॥ कपाविदापि नो विद्वान् गायत्री
मुदके जपेत ॥ गाय त्र्यग्नि मुखा यस्मा त्तस्मादुत्थाय
ता जपेत ॥ मार्जन जलमध्ये तु प्राणायामो यत स्तत
[illegible] स्तत्र कोर्धे ॥ जलेस्थले च ॥ एवं च प्राणायाम
स्य संध्या नार [illegible] स्थजले स्थले च विधानात् ॥
उपस्थान पर्यन्तो संध्या जलेपि कर्तव्या ॥ गाय
त्री जपस्तु स्थल एवोक्त ॥ वसिष्ठ तन्त्र स्थ तराव संध्या
करणं मत्तम ॥ यह वाक्य आचारादर्शमें है ॥
गायत्री प्रकृतिर्ज्ञेया ओंकारः पुरुषः स्मृतः ॥ तद्योरेव
संयोगा ज्जगत्सर्वं प्रवर्तते ॥ १ ॥ पादास्त्रय स्त्रयो वेदा
स्तत्वानि च तत्वगाः ॥ चतुर्विंशतिरेवास्यां तेषा व्या
प्तमिदं जगत् २ ॥ गायत्री साभवत्स त्रीप्रणवो मे
थुनं [illegible] न्यो न्य संप्रत्याद्दितिः ताभ्याम जो
जगत ॥ ३ ॥ यह [illegible] शास्त्र का है ॥

ऽ अध्याय २ पत्र १६ ॥ किं गायत्री किं सावित्री ॥ किं सरस्वती । ६०
न्यासि येन गायन्ति गायत्री तेन चोच्यते ॥ यद्व गायत्र
निर्वचनं सवित्रा पतत्वद्य रयती सा गायत्री ॥ यद्व गायं
त्रायते इति गायत्री ॥ यद्व गायना त्रायते इति गायत्री
त्री ॥ सविता देवता यस्याः सा सावित्री तेन च्यते
गौ ॥ सारस्वतीं यस्मात् कथ्यते सा सरस्वती ॥ गायत्री
नो ब्राह्मणो जातो ऽपि कृतु देवात् आतीरह ॥ ब्र
लविदुषौ वै भवति ॥ स्मृतिरप्याह ॥ गायत्री नामो भे
शूद्रः संस्कारेणाद्विजो ऽपमः वेदाभ्यासेन विप्रस्तु ब्रह्म
जानाति ब्राह्मणः ॥ संध्याहीनो ऽशुचिर्नित्यं मनर्हः स
र्व कर्मसु यत्किंचित् कुरुते कर्म नतस्य फलम
भवेत् ॥ यद्व वाक्य पाराशर्यं च कर्मणि चाराके
ध्याय ३ पत्र ६५ ॥ अथ गायत्री जपमहात्म्यं च ऋषिन
प्रातर्जपेत् हुत सायं देवी सर्वपाप प्रणाशनी ॥ स
जप्ता तत्पातकेभ्यः प्रमोचयेत् ॥ दशसा
ध्येन सर्वं कीर्त्यते नाशिनी ॥ लक्षं जप्त्वा
महापातक नाशिनी ॥ लक्षं सोऽपि कोटि प्रो
गुरुतल्पगः सुरापश्च विशुध्यन्ति तदा जप्त्वा
स्तेयः ॥ गायत्र्यास्तु जपं कोटिं ब्रह्महत्यां व्यपो
प्रयुत हवनम् ॥ गायत्र्याल लक्षहोमेन मुच्यते सर्वपा
तकैः ॥ अथ तिल हवन महात्म्यम् ॥ तिलान्द दाति
प्रातः तिलान्स्पृशति चाति च तिलैः स्नाति
लानं जुहुयात् सर्वं तरति दुष्कृतम् ॥ यद्वा कैम
ताद्याराके प्रणतीपके पत्र २०३ ॥ अपद्यपि चैकम्
यः सद्य पापो वैविधी यते ॥ यद्वा वाक्यमिता चाराः
वध्यात्तो च पापान्मतम् ॥ प्रातर्गायत्री जपो पापो
यद्वा वाक्य धर्मसिंधत्तपारिजात पूर्वार्द्ध पत्र ६४ ॥
संध्या चैव व चोपासते अप्रजिकाद्य पर्या विधिः गायत्र्यष्ट स
हस्रं तु जपे स्नात्वा समाहितः ॥ अथ निशा संध्या

वधः निर्णय सिंधौ पत्र २६ स गौ सांयं च दापारस्ते

स्यात्तैर्विश्वमुपास्तितम्॥ अर्थ॰ दिनकी
रात्रकी जो संधि है सो संध्या है वो संध्या
जो द्विजो करके उपासना करी उन द्वि
जो करके सारा विश्व उपासना करा
लिया है॥ मध्याह्नेपि च सन्धिः स्यात्
पूर्वस्याह्नो ऽपरस्य च॥ अर्थ॰ पूर्वी दिनका
और अपराह्न का मध्य जो है सो मध्या
ह्न की संधि है॥ तत्र जातकमे वी संध्या का
लक्षण है॥ प्रथम संध्या संध्या वन्दिमह
तारतारकापावततेजः परिराजिः मरवा
यो भास्करोदय पर्यावर्त तस्मै॰ संध्या का*
ल॥ मनु॰ अ॰ २ श्लो॰ १०२ पत्र ६॰ पूर्वा सं
ध्याञ्जपंस्तिष्ठेन्नैशमेनो व्यपोहति॥
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दि
वाकृतम्॥ टीका पूर्वसंध्यायांतिष्ठन्॥
जपं कुर्वाणो निशासंचितं पापं नाशयति
पश्चिमसंध्यायां तु उपविश्यो जपं कुर्व
न् दिवार्जितं पापं निहन्ति॥ अत्रापि जा
पकलमतम्॥ एतच्च प्रेक्षानाशपाप
विषयम्॥ प्रतः रावयाज्ञवल्क्यः॥ दिवा
वा यदि वा रात्रौ यदज्ञानकृतं भवेत् त्रिका
लसंध्याकरणात्तत्सर्वं विप्रणश्यति॥

ने स्व के जपयज्ञो ऽन्य धर्मो नास्ति ॥ पद्म
मनु के अ० २ मे श्लोक १०८ मे लि० है ॥
स्मृति मे पहले लिखा है कात्यायन मे अ० १
ति वेदुदयनात् सूर्यो मध्यमामपि शक्ति
तः आसीन उदमुखो संध्यां ह्यवति
केजपन् ॥ एतत् संध्या त्रयं प्रोक्तं ब्राह्म
ण्यं यत्र तिष्ठति ॥ यस्य नास्त्याद रस्तत्र
न सं ब्राह्मण उच्यते ॥ ब्राह्मण सर्वे
स्व ग्रंथ मे वी पहले लिखा है पत्रे ३० मे
प्रातः संध्योक्त विधिना एवं मध्यान्ह
संध्यामपि कुर्यात् ॥ अपरे विशेषः ॥
आपः पुनन्तु इति मन्त्रेण आचमनं कु
र्यात् ॥ भागवत सप्तम स्कन्धे अ० १४ मे
नारद वाक्यम् ब्रह्मचारी गुरुकुले वसन्
गुर्वो दीनं उपासीत ॥ ब्रह्मणा यज्ञो जप
संध्या त्रयमपि उपासीत ॥ सन्मार्ग
दीपनाम ग्रंथ मे वी लि० है प्रातः संध्योपान
रात्रिकृत पाप नाशयति सायं संध्योपानो दिवा
कृत पाप नाशयति ॥ माध्यान्हे न अगितो ऽ
मिमुखे ऽ धीयानः पञ्च पातको पपात प्रमु
च्यते ॥ पर त्रिकाल संध्या के प्रमाण है ॥

प॰ ॥ पं आकृत्रासि सैनिश्रा संध्या मुकुर्वीत कुर्वंश्च पित
मतो ॥ भागवते सप्तमस्कंधे अ॰ १२ श्लोक २ नारद
शील चारीत्र सु कुलेवस २ ३ बाँधो वेडपासीत ॥ आमि
अपन्नोंजपन्नु संध्या त्रयमुपासीत ॥ संध्या कालमे
नकुर्यात ॥ छन्दो दैवत मार्ष चविनियोगं च ब्राह्मण
मंत्रं पं चविधं ज्ञात्वाद्विजः कर्मसमाचरेत ॥ पह
शोधक हरसाराशारिपधमेश्रास्त्र काहै ॥ तैत्तिरिकोपनि
षद ते प॰ ग ३४ पर त्रिकालसंध्या का प्रमाणलि
खा है ॥ त्रिकाल संध्या के मंत्र लिखे है ॥ और वह स्पष्ट
रुपी पधपुरा श्रमे लिखा है कि ॥ आर्ष छन्दश्च दैव
मंविनियोगं तथैव च वेदितव्यं प्रयत्नेन ब्राह्मणे
न विपश्चिता ॥ १ ॥ अविदित्वातु यः कुर्यात या
जना ऽध्यापनं [illegible] जपं होममन्त्र जलादि
निस्य चास्यफलं न वेदीति ॥ २ ॥ पाद्य वेत्क
पि॰ मे लिखा है ॥ पूर्वा संध्या तु गायत्री ॥ सावि
त्री मध्यमा स्मृता ॥ या भवेत्पश्चिमा संध्या
सा विज्ञेया सरस्वती ॥ ३ ॥ संध्या त्रयन्तु
कर्तव्यं द्विजेना ऽऽत्मविदा सदा ॥ ४ ॥ जाड्य
न्नेत्र याप तेपस्माज्ञ गीर्वंतन्तः स्मृताः ॥
सो रक्षा पूर्ववेओ त्रे हे गायत्री का ॥ और पं
च प्रवर है ॥ त्रिकाल संध्या का प्रमाण भा
गवत स्कंध १० उत्तरार्द्ध अध्याय ८४ श्लो
क ६२ पचा है ॥ शरण्ये विप्रान्वेद्भान्ति
समाहितः तथा गमतद्धर्य वै पोडशे
श्लामे सें दरुश भारिक ॥ १ ॥ टीका वीर राघवी
में पक्ष प्रबोधिनी है ॥ दया अहोवि प्रान् अ
ग्रकाल [illegible] मे तथा

?र्व नमतः। योनु नमेत समन्त्रोद ? ? ?
स्यात ॥ ? ति ? ? संध्यानां समाहारः त्रि ?
ध्याम् ॥ ? और संध्या करने का मह त्मय महाभारत
अनुशा ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?
संध्यागतः सूर्यः चो ? न सम ? ? ?
? ? ? ? तेत चै ? ? ? ? ? ?
? ? ? नी संध्यागत ? ? ? ?
? ? ? ? ? ॥ १ ॥ उदिते ? ?
? ? ? ? ? ? ? ॥ ? ? ?
? ? ? ? ? ? वर्तते २ ॥ ? ?
ध्या का महात्म्य है देखो प. ? ? ? ? ?
? को ते त्याग देना परंतु संध्या का त्या
गन ही करना ? ? ? ? काम को छो
ड कर के संध्या को करते थे ॥ ? ? ? ?
? ? ॥ ? ? ? ? ॥ ? ? ? ?
संध्यां ? ? ? ? ? ? ॥ ? ?
ध्या त्रि ? ? ? ? ? ? ? ॥
? अहो रात्र योः संधौ ? ? ? ? ?
सा संध्या ॥ ? संध्या ? ? ? ? ?
? ? ? ॥ संध्या यान्ति संध्या ? ? ?
सा संध्या ॥ ? ? ? ? ? ? ?
यजु ? ? ? ? ॥ दिवसस्य च रात्रे ? ?
धि संध्येति ? ? ? ? ? ? ? ?

स्यात्तै विश्वमपारतितस्मु ॥ अर्थ॰ दिनकी
रात्रिकी जो संधि हे सो संध्या है वो संध्या
जोष्ट द्विजोंके रक्के उपासनाकरणी उनद्वि
द्विजोंके रक सारा विश्व उपासनाको
साग्या है ॥ मध्याह्नेपि च साधि: स्यात्
पूर्वस्याह्नो ऽपरस्य च ॥ अर्थ॰ पूर्वाह्न
ओर अपराह्न का मध्यजो है सो मध्या
ह्न की संधि है ॥ तत्प्रजातवामे वी संध्या का
ल है ॥ प्रद्धे साम्यातसंध्या यातिम्ह
तातितारका पावत्ततेणः परिगनिः मरवा
बोनोरक्कोंदपत्र पावत् तास्मि॰ संध्या का
र्तः ॥ मनु॰ अ॰ २ श्लो॰ १०२ पत्र ५९ पूर्वीसं
ध्यामु जपंस्तिष्ठेत् नैशमेनो व्यपोहति ॥
पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दि
वाकृतम् ॥ टीका पूर्वसंध्यायांतिष्ठन्
जपंकर्वाणो निशासंचितं पापं नाशयति
पश्चिमसंध्यायां तु उपविष्टोजपंकुर्व
न् दिवार्जितं पापं निहंति ॥ अत्रापि जपा
फलं तत्कं मु ॥ एतत्त्वं श्रेरसा नादिपाप
विषयम् ॥ प्रातःराव्यात्तत्व रक्के ॥ दिवी
वा पदिवा रात्रौ यदज्ञानकृतं भवेत् त्रिका
लसंध्याकरणात्तत्सर्वं विप्रलयंगति ॥

नेसूर्यकेऽपपर्णोऽनध्यायो नास्ति ॥ पद्म
मनु के अ० २ मे श्लोक १०८ मे लि० है ॥
स्मृति मे पङ्क्ति सा है कारूपापमे मे अ० १
ति वेदु द्ध्यनात्पूर्वीं मध्यमामपि श्रुति
तं अप्रासीनउअमृङ्ग्रारपीसं ध्यां हवेति
केजपपन्नः ॥ एतत्संध्यात्रयं प्रोक्तं ब्राह्म
ण्यं यत्र तिष्ठति ॥ यस्य नास्त्यादरस्तेन
सं ब्राह्मण उच्यते ॥ ब्रह्मपुराण सं
स्व ग्रंथमे वी यक्ति सी है पत्र ३०
प्रातः संध्योक्त विधिना एवं मध्याह्ने
संध्यामपि कुर्यात् ॥ अपर विशेष सं०
प्राप्य ऽन्नतं ऋतिमन्त्रे सा ग्रोपमनसुख
प्यति ॥ भागवत सप्तम स्कन्धे अ० १२ मे
नारद वाक्यम् ब्रह्मचारी गुरुकुले वसन्
गुरुवीदीनृउपासीत ॥ ब्रह्मणा यज्ञोपजप
संध्यात्रयमपि उपासीत ॥ सन्मार्ग
दीपनाम ग्रंथ मे वी लि० है प्रातरध्यापने
रात्रिकृतपापनाश्य श्चैसायमधीयानो दिवा
कृतपापंनाशयति ॥ मध्याह्ने प्रायेतोऽ
भ्युदयक्षयोऽधीयानः पंच्च पातकोपपातकात्प्र
मुच्यते ॥ पद्मनिज सन्ध्याकेप्रमाण है ॥

भवाब्धि सेतौ उच्चार्द्ध पत्र पं० पहुं ग्रंथ कमल गा
भस्य स्वामिनी त्ता त्म जो को नि मिता कि या है वो
प्रमवैष्णवपे ठ रु को ब्र ह्म ण्य प्रत्री वि चा व रा
मानी है ॥ श्रौत स्मार्तो का श्रौ र सम को हृ ष्य परा
यी ची है ॥ द्विजा ना न्तु भ राध्व गा वी ना प्र भो पास
नापादः सम्य ग्धा ग्व नास्ति इति नि श्चय ॥ तत्र
त्रै व र्णिका नां द्वि जे चैंगा ये त्यासं स्कार गर्भद्व
ति ॥ उक्तं च ॥ जन्मना जायते शूद्रः संस्कारा
द्विज उच्यते ॥ तच्चा च ॥ द्विती य जो म्म द्गाय
त्री सा च विशेष परा त्ति ॥ वि शेषं तो ति ॥ तद्यथा
॥ तत्सवितुर्देवस्य भर्गो धीमहि धियो यो नः प्रचो
दयात् ॥ भर्गः धरे ण्यं वरेण्यं यमु प्रा र्थनी यमु ॥
द्यथ ॥ यो भर्गो नो धियः नः प्रचोदयात् ॥ धर्म
गी ध प्रेरपति प्रेरयतु वा ॥ उक्तं च ॥ देवस्य सवि
तुर्भर्गो भर्गं मन्तं प्र भं विभं प्रत्ये वादिन एवा
द्वे वरेण्यं तस्य धीमहीं ॥ जाप्यत्री प्रोच्यते त
स्माजायं ते त्रायते यतः ॥ सावित्री द्योतनात्से
व सर्व वित्रौ सा प्रकीर्तिता ॥ जगतः प्रसवि
त्री सा वाग्रूपा चेः सरस्वती ॥ नचगायत्री
तत्पर्यपरः रे ष्टं पं सो तो ति वा च्यम् ॥ सवितु
भर्गो धीमही ति ध्येयस्य भर्ग शब्द वाच्य स्व
तेजसो नारायण स्या च्छक्ते र्हि नो पादा नाः
त ॥ तच्चे तेजो नारायण एव ॥ उक्तं वा च्योपः
स दा स वितृ म ण्ड ल म ध्य व र्ती नारायण स

मरिशाचवरसान्निविष्ट ॥१॥ तथा श्रुतिः आदि
त्येति श्रुः ॥ यः आदित्यमन्तरो यमयति ॥ य
आदित्यगतं तेजः तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ भ
भास्करे शशि स्वच्छ योऽरि इति ॥ पदं स्पेः नारायणी दे
वि रस्य प्रसह्य दृश्यते ॥ इत्यादि ॥ सूर्य
में गत तेज सो विद्यु स्वरूप वाराह विद्यु परमे
श्वर तेज न उर्द्ध रूप परात् ॥ आपश्चा च
वर्णात्मकस्य द्विगुणं भवति ॥ अतो वर्णात्मे
न एव स्मृतो द्विगुणं वाक्य मत ॥ पश्यन
ति पादो विद्यु स्वात्मा पञ्चम्यां तवः ॥ इत्युक्
के नाभ्यो से पत्ति उत्पन्न के आपश्च से साक्षा
द्वाते को नास्य पर आपृच्छ तम है ॥ तद्वा प्रत्यक्ष
देवता को सम्बन्ध न हो है ॥ विद्यु परमात्मा को
स्वरूप पर नहीं है ॥ इन वाक्यों से श्रुति स्मृति पुरा
णों में उक्त हुवा विद्यु परमात्मा पञ्च है ॥ अतस्तु
आचमन जो करते हैं सो धातु मय अप ॥ पने से कर
ते हैं सो पक्ष प्रमाण धातु मयन जल से ॥ आचम
ने के करणे का कहीं भी शास्त्र में न हि लिखा है ॥ आ
चमन निषिद्धो प्रकार मन्त्र स्मृति में ॥ उर श्लो
के पट वा पर्द पर पत्र पुष्प परस्तिरखा है ॥ प्रयु
ञ्जन मत्र स्पतले प्रांजलि तीर्थ जलं च दातव्या
श्रमं तीर्थ तले दैवं पित्र्यं तयोरधः ॥१॥
ब्राह्मण विप्र सौपर्ण नित्य काल अपस्पृश्य दोतो

काव्यत्रै पिता भ्रपी वा न पित्रो लावके दाचन ॥ उद्
धृत तिलक जैवी ना संध्या नहीं करनी यह
वाक्य आचार दर्पण में लिखा है ॥ उद्धृते दैवि
होन सु संध्या कनीयेके वरेत् तसर्वं राद्धो
से नीतमु नरके चोर्धोगच्छति ॥ यह वाक्य प
अपुराण में भी लिखा है ॥ स्नानं दानं तपो होमं दे
वार्चीपितृकर्म सुत्तसर्वं निष्फलं आतेल ला
टे तिलकं वीना ॥ गोत्र नमे स्तने पाने अभ्यंगं
ति दर्शनम् अन्यानि शुभ कर्माणि प्रदोषेन
तु कारयेत् ॥ संध्यातर्पण से पहले धोती नहीं धोनी
यह वाक्य कह पाराशरीय धर्मशास्त्र ॥ निष्पी
डयति यः पूर्वं स्नानवस्त्रमतुद्धमानः नि
राशाः पितरस्तस्य यान्ति देवा सह पिमि
॥ न पूर्व तर्पणं दत्त्वा निष्पीडयेत् ॥ सूतके
जननी मरणी लागे संध्यादी नी विधी ये ते ॥ सूत
क पातक में संध्या तर्पण देवपूजन नहीं वर्ज्य हैं
[illegible] ॥ निर्णयसिंधु में लिखा है ॥ [illegible] ॥

अथ श्रीमत्सारस्वत द्विजवर्ण्यैको ज्ञालय वंश
वतंस श्रीमद्धितोराम शर्मरचित संध्या
भाष्यं लिख्यते ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥
अथ संध्याभाष्यम् ॥ तत्र प्रथमं संध्या पद
वाच्यो निरूप्यते ॥ अत्र वेदाः ॥ संध्या शब्द वाच्य का
लमाह ॥ यथा ॥ अहोरात्रस्य यः संधिः सूर्यनक्ष
त्रवर्जितः सा तु संध्या समाख्याता मुनिभि
स्तत्वदर्शिभिः ॥ [illegible] सर्वत्र एक सु काल ति रि

कं संध्याशब्दप्रतिपाद्यां देवीमाह ॥ यथा ॥ संधौ सं-
ध्यामुपासीत नास्तं गते नोद्गते रवौ ॥ संध्याविंती मध्यां द्
संध्यायाः अथ्र्यपल द्वयं स्मृतम् ॥ तस्याः प्रातःकालादि भेदे
न नामवर्णभेदमाह ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ ह्री
संध्यातु गायत्री सावित्री मध्यमा स्मृता [illegible]
पश्चिमा संध्या सावित्री या सरस्वती ॥ श्वेताम्
वति सावित्री गायत्री रक्तवर्णा कोकुम्भ [illegible]
स्वती [illegible] संध्या [illegible] पम दाहृता स्मृता ॥ अत्र च सं-
ध्या [illegible] मानो पासेति संध्येति व्युत्प-
त्ति र्बोध्या ॥ संध्याकाले सेव्या वा संध्या ॥ [illegible]
[illegible] कर्तव्ये [illegible] जैनाले विद्वेषद [illegible] त्रिस-
ध्या पदेन [illegible] लाप [illegible]
न्या च संध्यौ विधेया [illegible] इति कर्तव्यतास [illegible]
[illegible] व्युत्पत्तिः ॥ संध्या प्रातः [illegible]
[illegible] ॥ अथ संध्यायां दोषानिर्णयमाह ॥ व्या-
सः ॥ न हि संध्याः [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] गायत्री
[illegible] ॥ [illegible] गायत्रीज-
पस्तु [illegible] ॥ यथा [illegible]
कदाचिदपि नो विद्वान् गायत्रीमुदके जपेत् ॥ गाय-
त्र्य[illegible] तस्मादुत्थाय तां जपेत् ॥ [illegible]
[illegible] संध्या [illegible]
[illegible]
[illegible] संध्या [illegible] ॥ [illegible] शातातपः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ इति [illegible]

नविषयम् ॥ अथ कालनिर्णयः ॥ तत्र प्रथमं
प्रातः सायं संध्ययोः कालमाह ॥ संधौ संध्यामुपा
सीत नोदिते नास्तगे रवौ ॥ इति वाक्यात् प्रातः सूर्योदया
मे नंतरम् नेकाप्पी ॥ सायं सूर्यास्तादनन्तरम् ॥ नका
ध्या ॥ अत्रोभयत्रारम्भस्यैव निषेधः ॥ यदाह दा
स्यंतपामनाड्यो द्वे संध्यादिः काल उच्यते ॥ दर्श
ने द्विरेखापासदनो मुनिभिः स्मृतः ॥ या
ज्ञवल्क्यस्तु ॥ मुहूर्तमात्रं कालमेवाह ॥ यथा
ह्रासवृद्धी हि सततं दिवसानां यथाक्रमं संध्या
मुहूर्तमात्रं तु ह्रासवृद्धौ च सा समा ॥ अस्यस
वेतु प्रातः सायं च संध्या दंडद्वयमेव भवति ॥
दयः ॥ स्मृतवाक्यं तु संध्याकालः प्रागुदया
तु विप्रस्य द्विमुहूर्तकः क्षत्रीयस्य तदर्द्धं तु
पदं तु विशः स्मृतः ॥ तच्चोवास्तमितं तमो वे
प्पादीनामयं क्रमः ॥ कालतारतम्यदर्शनेन दचाव
चनेषु ॥ समानं न्यायु ॥ ऋषयो दीर्घसंध्यत्वाद्दीर्घ
मायुरवाप्नुयुः ॥ प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्म
वर्चसमेव च ॥ इति मनुवचनेन संध्याया दीर्घत्वं
तु प्रातरुदयावधि जपेन ॥ सायं च नक्षत्राव
धि जपेन वाच्यम् ॥ यदाह याज्ञवल्क्यः ॥ जप
न्नासीत सावित्रीं प्रत्यगातारकोदयात् ॥ संध्यां
प्राक् प्रातरेवं हि तिष्ठेदासूर्यदर्शनात् ॥ प्र
थके पश्चिमाजपे मत्वः ॥ प्रातरूत्वोऽपि मव
रजनी प्रांतयामस्य पूर्वार्द्धे प्रातः नामकः ॥
स समयः प्रोच्यते सद्भिर्वज्रदर्शनरवोदिदः ॥

संध्या पूर्वं दृकालं स्याच्चतुर्नाडी महीपते ॥ दृत्य-
स्य दर्पनोच्च ॥ दाक्षुरखी ये ॥ उदयाभ्यांकृतं नोर्सं-
ध्यां धटिकात्रितयं विदुः ॥ प्रसोग दृ भास्करा-
दू र्द्धं तथैव घटिकात्रयम् इति ॥ अत्रगौणका-
लमाह वृद्धः ॥ न प्रातर्नियतो यस्य संध्याका-
लोपि पद्यते मुख्यः कालोऽत्र कल्पस्य संध्ये-
ति कर्मणी स्मृतः ॥ तत्रा संगव प्रातः सं-
संध्याया गौणकालः ॥ प्रा प्रदोषा वसानस-
यं संध्याया गौणकालः इति माधवः ॥ अत्राशि-
पाषा गौतमेनोक्तः उत्तमा तारको पेतेति ॥ अत्र
संध्यात्रय नुकल्पम् इति वचनान् संध्या संध्या-
या अपि पारावत्कोऽपि मत्वो त्सापि काल्पि-
तं संध्याकाल उक्तो मेरुतंत्रे ॥ प्रकृति-
पंचकाद्दूर्ध्वं विंशाद्वी वाकेपयोपया प्रासु-
अभिजित कालः श्रेष्ठ कोष्ठतरः स्मृतः ॥ संध्याया-
गौणकाल माह गोभिलः ॥ मुख्यकाले यदावश्य-
कर्मकर्तुं न प्राप्यते गौणकालेपि कर्तव्यं गु-
गौणो ल्पेत्र दृश्यतः इति ॥ परं तु अत्र मुख्यका-
ल लोपे प्रायश्चित्तमुक्तम् ॥ संग्रहे ॥ संध्याकाल-
स्य मुख्यस्य लोपे नाडीत्रयान्तरं प्रायश्चित्तं म-
वेक मर्घ्य मधिकं संप्रदीयते ॥ वशिष्ठोपि ॥ काले
तिक्रमणे चैव त्रिसंध्यास्वपि सर्वदा चतुर्थार्घ्यं-
प्रकुर्वीत प्रायश्चाहृति संपटमिति ॥ अत्र प्र-
मं संध्यापोदयमर्घ्यत्रयम् दत्वा प्रायश्चित्तार्थं
चतुर्थार्घ्यो देयः ॥ जो नमस्ते संध्याकाले विहि-
तां नो स्नाहो च मम्यु यथा विधिः जपेद् ये
देवी तस्य कृता भवेत् ॥ गायत्र्योज्जपो
॥

नैव पंचाचार्वनुष्टुपक मेणी प्राणायामत्रयं कृ
त्वा जपं कुर्यात् इति स्मृतम् ॥ यमोपि ॥ प्राणायामत्र
यं प्रातः संगवे द्विगुणं भवेत् मध्याह्ने त्रिगुणं
प्रोक्तम् अपराह्णे चतुर्गुणम् सायाह्ने पंचगु
णं कं संध्यातिक्रमणे भवेत् ॥ अत्रापि निर्णयसि
न्धौ ॥ उत्तम मध्यम गौणभेदात् संध्यायाः
कालत्रयम् ॥ निर्णीतम् ॥ तत्र मुख्यकालाति
क्रमणे गौणकाल पर्यन्तं प्रथमं प्रदोष ग
मेके प्रायश्चित्तं कृत्वा कालत्रये संध्याव
न्दनं कर्तव्यम् ॥ तस्यापि असंभवे उत्तरोत्तर
कालातिक्रमे प्राणायामाधिक्ये जपसम
र्थ्ये प्रायश्चित्ते तत्र पं कृत्वा संध्यावंदनम्
कर्तव्यं ॥ प्रत्यवायो पदेत् प्रातः स्नानमध्ये ती
कृतस्नानात् के चस्य नैश प्रथम यामान्तो गौण
कालः ॥ रात्रौ प्रहरपर्यन्ते देवाकार्यो गरीका
रयेत् ॥ प्रवगाह्य जलाशयम् सौरं जाप्यो विव
र्जयेत् ॥ इति स्मरणात् ॥ कौर्मेऽपि तत्रापि द्वि
र्ले यः संध्यामिह रन्ति ॥ सर्वेषां कर्मणां तु ले
प्रायश्चित्तम् समाचरेत् इति वचनात् ॥ प्राय
श्चित्तमाह जमदग्निः ॥ एकाहे व्याप्यते क्रोते
संध्यावंदनकर्मणि अहोरात्रोषितो भूत्वा गाय
त्रीं चायुतं जपेत् ॥ द्विरात्रे द्विगुणं प्रोक्तम्
त्रिरात्रे त्रिगुणं भवेत् ॥ त्रिरात्रात् परतः सं
ध्या ... दैव न संपाद्यः ॥ संपाते गोऽपि कार्ये

संस्कारं पुनराचरेत् ॥ यदा तु व्याधियुक्तः स्याद्रोगी दैवे
संध्याकर्तुमसमर्थः तदा तु तदपरैः तद्दोषैः संध्या-
कार्या ॥ तदुक्तं स्मृतौ ॥ उन्मत्ते दोषयुक्तस्य वा-
धिग्रस्तस्य निःस्पृशः ॥ पिता भ्राता तथाऽन्यो वा
संध्यावंदनमाचरेत् ॥ पैठीनसी ॥ सूतके
मृतके चैव रोगे प्राप्ते तथाऽध्वनि मानसीं तु
जपेत्संध्यां कुशवारिविवर्जितः ॥ मरीच-
जः ॥ संध्यां वै मनसा ध्यात्वा मंत्रांश्च स्मृत्य
द्विजः ॥ प्राणायामं विनाऽसवे पश्चात्कार्यं
हि मार्जनम् ॥ उच्चाप्य वाचा गायत्रीं ध्या-
नं धीजलोऽनपि ॥ प्रभातविघ्नातिके त्वेव
गायत्रीं मानसीं जपेत् ॥ प्रजारोगेस्यते
मंत्रस्नानाद्यभावे मानसी संध्याविधिः
॥ रोगे त्वेते विषये पैठीनसीवाक्ये सूतके
मृतमानसीसंध्याविधानात् ॥ केचित्तु
सूतकमृतके जातेतु मानसीं संध्यावि-
धिरेव ॥ केचित् रोगे त्वेतां नैव सूतकादौ मंत्र-
स्नानविधायकं वाक्यं येन कल्प्य वागन्धो मंत्र-
कल्पेन ॥ रोगे तु हौ तु मंत्रस्नानविधानवाक्या-
नि ॥ स्नानं च विधिप्रोक्तं वारुणं तत्र भेदतः
तत्रापि वारुणं प्रेरकम् इतर जौणमेव तु ॥ जाते
वारुणं त्वाहिं वाप्यंगेऽवमेवं च सार्वस्वतमीरि
स्नानं स्मृतं योः हैवं गत्वे ततः ॥ एतान्यागम याजी-
नि ओणस्नानानि ॥ शरीराद्यसामर्थ्ये स्वल्पापि
नो ब्राह्मः मंत्रैः ॥ प्रसामर्थ्ये शरीरस्य कातेस

[illegible]

त्याद्युपेक्षया मंत्रस्नानादीनां सोक्तमपि निषिद्धे का-
लेऽपि ॥ पाराशरस्मृतौ ॥ असामर्थ्याच्छरीरस्य
कालशास्त्रं विधीयते ॥ अथ निमार्गे च ॥
अत्यन्तानवकाशे अत्यावश्यककर्मणि
अर्थं मानसी संध्या विधिः ॥ सत्यव्रतः प्रकाशे
मध्यप्रदेशे जलादिलाभे संध्या कर्तव्यैवेति वो-
ध्यम् ॥ अथ संध्या अवश्यं कर्तव्येत्याह ॥ संध्याही-
नोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु यदन्यत्कुरु-
ते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत् ॥ दक्षेण पक्षे श्रु-
त्यपि ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि संध्योपासनिकं वि-
धिं ॥ अनर्हः कर्मणां विप्रः संध्याहीनो यतः स्मृ-
तः ॥ इति ॥ याज्ञवल्क्येन ॥ अनेन पापितानास-
ध्याविघ्ननाशकरणं च कस्मान्नोपास्य इ-
त्येतत् द्विकामोद्विजोत्तमः ॥ संध्याकरणे कृ-
तविशेषमाह यमः ॥ संध्यामुपासते ये तु स-
ततं संशितव्रताः ॥ विधूतपापास्ते यान्ति ब्र-
ह्मलोकं सनातनम् ॥ याज्ञवल्क्येन ॥ दिवा वा
यदि वा रात्रौ यदज्ञानकृतं भवेत् त्रिकालसंध्या
करणात्तत्सर्वं विप्रणश्यति ॥ अत्र सामर्थ्ये स-
ति संध्यात्रयमेव कार्यम् ॥ असामर्थ्ये तु द्विका-
लमेककालं वा संध्यावश्यं कर्तव्या ॥ अकरणे
दोषमाह मनुः ॥ न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते
यश्च पश्चिमाम् स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्मा-
द्द्विजकर्मणः ॥ दक्षेण पराशरेणापि ॥ एतत्संध्या-
त्रयं प्रोक्तं ब्राह्मण्यं यदधिष्ठितम् ॥ यस्य नास्त्यादर-
स्तत्र न स ब्राह्मण उच्यते ॥ [illegible]

[illegible]

ऽप्रथ सप्तमीति कर्तव्यता माह ॥ वामेव दु न्कुशानि
ति ॥ तप्रकारितत्त्व ॥ दमहो न्नातु पासंध्या प्रञ्
दानं वीनो देवं ऽअसंख्यातंच यज्जप्यं तत्तत्रवैनि
ष्फलं भवेत् ॥ कुशाभावेशतातप ॥ जपे होमेत
ा दाने स्वाध्याये पितृ कर्मणि ऽप्रशस्त्यं तु कं
कुशाः तत्वं वर्णरजतैः कुशैः ॥ ऽप्रथ संध्या वि
धिः ॥ वामेव इन्द्र कुशान् दक्षिणे पाणौ संपवि
त्र कुशान् पंच वर्धन्तेवा ॥ हे ऽन्याऽभिमुख ऽआचम्य
न्यंतमित्यभिमन्त्रपुनराचामेत् ॥ ऽअत्र न्यंतमि
ति मंत्रस्तु आर्षच्छन्दो दैवत विनियोग सहितो
पठनीयः ॥ तत्सहित पठने पारावल्क्योऽभिमत
त्वात् ॥ ऽप्रथम प्रणवोपि ऋषि छन्दो दैवत विनि
योग सहितएव पठनीय ॥ प्रथमं स्मर्ष
मिरूप रणद्वारा मंगलार्थे ॥ तुस्यापि ब्रह्म हे
वा रत्वापते ॥ न्यंतमितिः ॥ ऽप्रयन्छ ऽदेवदीपम
न्त्रः ॥ ऽप्रपरक्षा तैत्तिरीपतन्नाते तिरीप मंत्रो
रान्ने रज्ञापत इति पाठः सम्प्रदाऽऽ सिद्ध इति ऽप्रके
ल्प पद्धि वमिति च सहितं सर्व मंत्रो माध्यादि
ये न पठनीयः ॥ पाठोव तत्कोऽज्ञा रक्षात् ॥ ऽप
स्यार्थः ॥ न्यंतं सत्यं च प्रज्ञलणा नाम ॥ तत्पादे
ऋतिः ॥ स स्तं ज्ञानुमनन्तं प्रतनोति ॥ स्मृ तिप
न्यंत मे का दार प्रतनोति ॥ ऽअत्र ऽप्रति पदि
ध्याः पतित न्यंतं वे सत्यं च पूर्वं ऽप्रतिपद
ऽप्रपर्णीत पचि पूर्वे काले तदानीमु केवल प्रलि
नासीपृत्यर्थः ॥ ततोऽन्नारम्भ [redacted]
ऽप्रलयाद वस्था यामेव रात्रिरज्ञापत ॥ स

[illegible]

सौसंवेदने ऽप्रपंच कावरुध्यते॥ तथा च सकलमं
धकारमयमासीत्॥ तदुक्तम्॥ ऽआसीदिदं तमो
भूतमप्रज्ञातमलक्षणम्॥ ततोऽनन्तरं॥
ख्यारम समये॥ ऽअभीतः सर्वतः इद्धात
दीप्तात् ऽअर्थात् प्रवृद्धज्वलात् सर्वतोऽलब्ध
वच्छिन्नात् तपसोत्तोकाद्दृष्टात्॥ ऽअर्णवः पा
नीयमयस्यास्तीत्यर्णवः पानीयमयः॥ समु
द्रः उद्भवतीति समुद्रः॥ प्रलयकाल प्रचंड
वातोच्छ्रितवीचिविस्फुरितमज्जोल्लंघितलोका
लोकमर्यादइति यावत्॥ ऽअध्यजायत मादु
र्भूतः॥ ऽअर्थात्सकलतोऽतिच्छिन्नमितं प्रप
मं जलराशिरुत्पन्नः उल्लमप्रायः तथा
च स्मृतिः॥ सोऽभिध्याय शरीरात् स्वात् सिसृक्षु
र्विविधाः प्रजाः॥ ऽअप एव ससर्जादौ तासु
बीजमवासृजत्॥ एतमत्र का वाक्ये॥
ओन्ऽअनादिके सृष्टिप्रलये प्रलयका
लीनेऽवर्जितमयः समुद्रो विस्तार भस
मये दृष्ट इति भावः॥ ततः समुद्रादधिप
श्चामिष्यतो महाप्रलये वेणु पूर्वस्य विश्वस्य
वशी निर्माणे प्रभुः धाता ब्रह्मा ऽप्रजापतिः सर्व
धाता यथापूर्वं पूर्वकल्पानतिक्रमेण ऽसूर्यो
रात्राणि विदधत् कुर्वाणः सूर्याचन्द्रमसौ
ऽअकल्पयन्निर्मितवान्॥ तयोरेवाह क
तेति निमेषकस्योति॥ चंद्र एव रात्रिं निमित्तं वर्ण
त॥ विद्युदादियोनेन वञ्चन तपसमोत्तमीति
देवदासः॥ ततः सूर्याचन्द्रमसौ सर्वतो

रो ऽजापत सम स्य न्च ॥ प तौ रात्रि दिवस वि
भाजो एव स न्च सर स्वव स्था म वतीत्ति भाव ॥ एतं
च पूर्वा चो र्ध्वा व्याख्याता नरो पादुत्तमु ॥ व सुत सु क
र्मा चेन्द्र मसो: प्रागेव सम क्रादस्यवा दर्चिः ॥ व
र्णा तरसेव हेतोः ऽहो रात्र [illegible] स्था मिद
ता ॥ [illegible] पूर्वा जोपत कृत्येव साधुः ॥ प्रजा
पत द्यौत पूर्व कि या त्रि [illegible] कल्प पूर्वि
प्रसज्ञा नते ॥ [illegible] पृथिवी अन्तरिक्ष
स्वश्च कल्पे पदित्य व्यवहितं ॥ प्रा स
ध्र स्यपो पृथि च्च ॥ प्रधान नतरस्य द्वेवधा
तमा नं स्व: पञ्च विधं स्वलोकम् ॥ प्रतत
स पावि व र सहितं पम्पिवो ऽ भप सृप्यत्
तर श्चांवे स एव धाता यथापूर्वे ॥ प्रचा
सं व्यपते ॥ यथापूर्वं यथा क्रमम् ॥ पृथिवी
उपरि प्रतारि क्षे नद्या त्रां दि लोकं ॥
पंचविधं स्वर्ग यथा क्रमं पूर्वकल्पा नुसा
रेण प्रकल्प यन्निर्मितवान् ॥ एवं च न व स्व
रात्म कचतु र्दश भुवनानि धाता एव सृष्ट
वा न्रकृत्य र्थः ॥ प्रत्र पृथिवी शब्देन पृथिवी
विवरस्थत सप्ताधो लोक सहितं पृथ्वी
द्यते ॥ प्रन्तरि च पदेन सनदीत्र लोक
द्यते ॥ प्रन्तरि क्षेग्रहते ॥ स्वप
[illegible] म पदस्य दिवं अंतरि क्षेगर्ह्यते ॥ स्वप
देन ह स्वावे पो बाराणं सस्यांतानां परिग्र
हः ॥ दिवोमेतितु स्वर्ग विशेषणाम् ॥
प्रन्तरि क्षा स्व न्च ना दिमि द्योत मानम तः स्व
[illegible] ॥ [illegible] स्वपदी ज ह ॥ दिवशे

...रक्तानां मकरादिचतुर्णां परिग्रहः ॥
...कृ: प्रत्ययप्रसङ्गेन ॥ तत्र चोक्तं ॥
ततः ॐकार स्मृतिः ॥ सर्वमन्त्रेषु च सिद्ध
न्दो दैवतेऽस्य प्रभवङ्गं ज्ञातव्यम् ॥ विनि
योगो प्युच्यते ॥ तथा च श्रुतिः ॥ यो ह वा अ
विदितार्षेयच्छन्दोदैवतविनियोगेन मन्त्रेण
याजयति वाध्यापयति वा स्थाणुं वर्च्छति
गर्तं वा प्रतिपद्यते ॥ प्रमीयते वा पापीयान् भवति इति ॥
...दिङ्मात्र ॥ आर्षं छन्दश्च दैवतं विनियोग
स्तथैव च वेदितव्यं प्रयत्नेन ब्राह्मणेन विशे
षतः ॥ प्रणवप्रथमो कारो वाक्यं सर्ववैदिकमन्त्र
प्रबोधनम् ॥ प्रणवस्तु पारस्कराणि योकारः ॥ तु
प्रत्ययः ॥ प्रवर्तितं सर्वप्राणेन संज्ञेदं वा...
नु लोके वा ॥ तथा च श्रुतिः ॥ स एष सर्वानुमा
ण्डवेदिसज्जं च... तमात्रः ॥ स एष ॐ
...तं... पत्ति... रिति ॥ च...
व... च हृदि... ज्योतिः ॥ वह... ज
जप्यति वा ॥ च... ज्ञाने वा ॥ च सि...
प... वं... पिता गायत्री छन्दः सर्वे...
...ण्डदेवता ... उच्यते ॥ अग्निर्देवता
प्राणगतो ... सर्वेषु प्राणिनां ज
...रान्तर... विनियोगः ॥ दैवतादेवो मन्त्रः
मा ॥ यथा हयास्ये ब्रह्म ॥ ॐकार ... परम...
सर्वमन्त्रेषु नायकः ॥ प्रजापतेः खाद्य
मे तपसिद्ध सर्वे ... ॥ ... नोपात्त ... मतस्य न
...न स्वयंभुवः ॥ आद्यं ... तद्वेदलक्षणः ॥

दैवतमुच्यते ॥ आदौ सर्वत्र यं जीतावि विधेष्वे
व कर्मसु विनियोगः सम्प्रदृष्टः स्वेतवर्ण
उदाहृत इति ॥ भरखोस्पन्न इति वेदाविर्भाव
समये आदावज्जग्न हायवीनाप्रपद्म स्वयं
भेवरावदत्र लालाभूतिमानाविर्भूतः ॥ नदु
पलणा निर्मितः ॥ अत एव अस्य ब्रह्मलोके
षिः ऋषिः मन्त्रद्रष्टा योम जालं ॥ देवता
चोस्य प्रपति मतस्य ऋषिः ॥ तद्दु के मे नेश
स्त्र ॥ महेश्वर भरवादशाचाधः साक्षाद्
सामनरसे पति ॥ ऊब्रह्मा सतस्येह
षि ईरीत इति ॥ अन्यत्रापि भण एवस्य
ऋषिवर्लिगापत्र्यं छंदः एव च देवाद्वि
ओं हृति ब्रह्मविनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ब्र
हतीनामपि प्रलयावाविर्भावः पदार्थो
नेकः ॥ प्रजापतेर्लोहरतः सूत्रेस्य परमेष्ठि
नः अस्ता पैव समस्ता भूभोभ मन्दार योमि
ति ॥ अस्यार्थः ॥ यः सर्वाः प्रजाः सृजति अवति
च तस्य प्रजापतेर्ब्रह्मणः पूर्वस्य पुराणस्य
जगदादौ आविर्भूतस्येति यावत् ॥ परा सर्व
कृष्टा प्रान्त दृष्टिः शोभावा स्योतेतस्य रमे
तास्मेन्त्य स्मे पदे शत्याख्ये धाम्नि तिष्ठतीति प
मेष्ठी तस्य व्याहरतोगदतो व्यस्ताः समस्ताश्व
हृतयः स्मुत्पन्नाः ॥ तथा ब्राह्मं प्रावद्वल्लासके प्र
देवताकं वाङोइति समुत्पन्नम् ॥ अत्र प्रथमं कासे
पति कोषका ॥ अतः ताषा प्रजापतिः ऋषिः ॥ पस

पौरोऽवन्तः॥ व्याहृतीनां च सर्वासां ऋषिर्ब्रह्म
समाप्तेः तथा छन्दांसि चोक्तानि तानि सम्यक्
प्रदर्शये गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् बृहती पंक्ति
स्त्रिष्टुप् जगत्येति वीप्ता देवसवाके प
ती: अग्निवायुसूर्यत्वे विष्णुरेन्द्रस्य देवता: समुदाहृता:
॥ प्राणायामप्रयोगेषु विनियोगे उदाहृतः॥
नेपावत्सराणाम्॥ चतुर्दशविधः सर्ग इत्येव देव्या
तस्य च पंसहृलोकाभिविज्ञेय तत्र संक्षेपतो
श्रुतः॥ चतुर्दशविधः सर्गः सु देवोऽष्टवि
धः सर्गः॥ ब्राह्मः प्राजापत्य ऐन्द्रः पैत्रो गान्धर्व
यक्षरक्षः पैशाच इत्यष्टौ॥ पञ्चमो सर्गप
श्चिमसरीसृपस्थावर एवं पञ्चधातिर्य
ग्योनिः सर्गः॥ पशुसर्गो मानुषश्चैकविधः
॥ इति सम्प्रसन्तो भौतिकः सर्गः स्मृतः चतुर्दशविधः॥
भूर्लोकादिसु॥ इत्याद्याः॥ तत्र भूर्लोकस्य
वेदादि॥ भुवनानां नमस्तानां ऽधस्ताद्वेवडत
लोकान् ब्राह्मणादिक्षेत्रतदो कोटि योजनसंख्याः
प्रवीतः नामानरकः तस्योपरि वर्तते॥
तेषां गामिनः लक्षयोजनप्रमाणोऽसौ भू
मेरुः जम्बू कोकप्रक्रौञ्च शाल्मली गो
मेदकपुष्करेति सप्तद्वीपाः मेरुपातालं
कावपेतादृशजलरनिर्माण एवाऽसप्तैता
न द्वीपा वाचैव सप्त सत्तां सप्तकोमेरु॥
सिद्धवराश्च पश्चवश्चिभे सर्वलोकाः॥
ततः परस्तात् ... लोकः॥ इति पञ्चविध

माहेन्द्रो महेन्द्रस्वामिकः प्रथमः ॥ प्राजापत्यो मह
नीयको द्वितीयः ॥ ब्रह्मलोकः त्रिविधः ॥ जे
न तपः सत्यमिति ॥ पंचानां अपि एषां स्व
र्गत्वं साधारणः स्वर्गभेदत्वात् ॥ अतो व्या
हृतीषु आसां ब्रह्मा ऋषिः पारमेष्ठ्यवन्द्र
न्नि देवताः प्राणायामे प्राणरोधने विनियोग इति
योगेषु निःसृतिः कीर्तितः उपचे ॥ या देवते
स्तासां सम्बन्धो तावत्स्मार्ह ॥ यया पतोऽस्य दिवै
स्त्रो भूतानि स्थावराणि चतस्मादूर्द्धं स्थितिः
या पृथ्वी ज्ञा इति स्मृताः ॥ भवन्ति भूयो
कानि उपभोग्यानि पुनः कल्पान्ते उपसंहा
र भुवः तस्मात् स कीर्तितः ॥ ध्यातो यद्विर
ते गोचरे प्राजापतेतानि वैसदा प्रलयस्य कृ
तो स्वर्लोकः समभूदन्तः ॥ प्रधानो रवे
लोकः मेघाप्यपरिभाषितः ॥ इन्द्रस्य स्व
लोकः कानां महः सोन निगद्यते कल्पभेदे स्मृतो
लोकः कानां महः सोन निगद्यते जनः आयनो सनकादि
नाम प्राणिनो यतः जन स्वयं कीर्तितः ॥ सनकाद्यास्तपसि
तो लोके जनस्यान्न कीर्तितः ॥ अधिकारे निवर्तते
ज्ञापेचान्ये तेन स्मृतः ॥ सर्वे यावेव लोका
नुतिष्ठत्यस्मिन् तापसास्ततः सदा ज्ञानकर्म प्राति
॥ ब्राह्मणैः सतत एते ब्रह्मणः प्राप्युते चोपभोग
॥ तपः सत्यस्य भावः ततः सत्य सधर्मः
यत्रापि पत्न्यावत्ते ततः ॥१॥ जायन्ते यावैस्मा
कः तस्मादृतेति चेत सप्तमाद्गायत्री
प्रजापतेनापतये प्रजासिका
प्रतीतः तस्माद्

विश्वायः॥ विश्वं समन्तात् भेदप्रतिसंहृप्रतिसर्वरसो
त्पादनेनेति विश्वामित्रः॥ ऋषिः॥ गायत्री छन्दः॥ स
विता देवतेति॥ सविता देवता वेदमाता [illegible] नारायणी
त्यादि देवता रोपमु॥ सर्वोपमुपनिषत्सु प्रसिद्धम
च सः पत्यपतिपाद्यते सर्वेभावास्मै केचमुच्यामि
धीः पते॥ येण गायत्र्योः॥ तस्या अधिकार्दे चोपनि
षदि पद्यते॥ गायत्रीवाइदं सर्वं यदिदं किंचवाग्
वै गायत्री वाग्वा इदं सर्वं भूतं गायति चत्रायते च या स
त्यायाच वागेवसा येयं पृथिवी अस्या गृहीदं सर्वं पृ
तिष्ठितं॥ इत्यादिस्तु यमानं अपि गायत्री सू
क्तः॥ प्रकृता यां इहमाहि त्यां वर्तते॥ एतएव
गायत्रं तं जापतेइति अनिर्वचनम्॥ गौणं च
पालनं स्वपकारा इत्यभिधानं च॥ एतां च संध्या
दौ जपतां कामिनां त्रिवित लदुरितं प्रवरणपूर्व
के स्वर्गादि प्राप्तिर्भवति॥ निष्कामानां तु॥ अन्त
प्रेविचोपमूतजीवेप्रत्यग्रपद्वविदुर्वसत्यचि
त्सुखाविहीनचैतन्यब्रह्मभावपरप्राप्ति
र्भवति॥ सर्वेषामपि चतुर्वेदद्वपदराप्रचिद्धिं
र प्रस्तुतप्रभावमुत्राधारा साधनं करणादि
चायरवं फलप्रापयता जपतां न भयकृतो पिभक्ति
॥ तथा च याज्ञवल्क्यः॥ प्रणवेनैव युक्तस्य व्याहृ
तिभिश्च सप्तभिः॥ त्रिपदा यां च सावित्र्यां न भयं विद्य
ते कचित्॥ तथा च श्रुतिः॥ तस्याः प्रजापतिरेव भवति॥
यदि ह वा अप्येवंविद्वहुह्यैव प्रतिगृह्णाति न हैव
मेतत्सहस्रत्येव चैवांव घापि वक्तृत्वमपं करो
ति सर्वमेतत्संतत्तं गाङ्गं पूतो नरोऽप्रतःत
भवतीति॥ अस्यार्थः॥ तस्याः गायत्र्या इत्यनेन वि
तत्प्रजापतिर्महर्वं इत्येवमुक्तेनीत्येवं विद्वान्सा
महापि चाऽऽदक्षिप॥ अमृतं अमृत अमृत अ

श्रीगणेशाय नमः मोहं अलवी नानवातील
ततं दुखं च मिश्रं गी नामार्त

वृ. प्र. व ८ २३

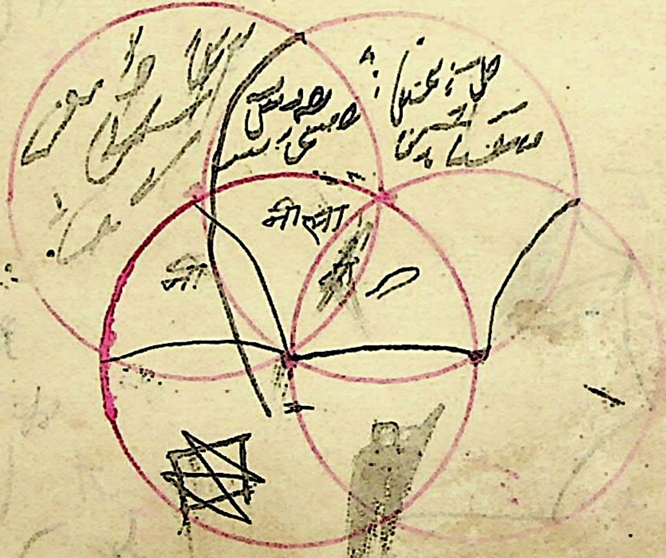
प्रातिपदिकत्वं नाम प्रा. व्युत्पत्ति
पक्षे सर्वे धर्वार णक कृत द्धिता
नौ समानाधिकरणत्व कत्वावद्वि
भक्षकाधिकरणक वप्रवर्त
मानत्वं प्रातिपदिकत्वम्

समानाधिकरणत्वं नाम कं एकार्थनिष्ठ
त्वमेक विभक्तिकत्वं सामानाधिकरण
त्वम् एकार्थ किं नाम सकृते इति सं
ज्ञा कि संज्ञायां इस धातु का प्रयोग बनता
है नपस्कारस्य किं लक्षण मर करण्यांवीर
संयोग विशेषेण स्वापकर्ष सूचक है
आकार : भेदनम स्वात्

[illegible]

३२

७८ 'सर्वोदयादिशम्' सर्वोदयादिशम
ॐ



नमस्कारस्य किलद्वाणंकरम्यांधिरसयो
गविंध्रोवेरास्वावक्कबेसृचको यावारभेद
नमस्कारहापोमः रवेको ओरसोर कः
श्रुवुतांपोस्र ग्रं ह्लु न्दं हलत्पमोते

२५

श्री

श्री

अथ शिक्षा॥ येनाक्षरसमाम्नायमधिग
म्यमहेश्वरात् कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं
तस्मै पाणिनये नमः। अज्ञानान्धस्य
लोकस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया चक्षु
रुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः
अनुपाशिदौश्चवदागिमपाणिनीयं

[illegible]

के॰ वै॰ वेद॰ ... अमश्रीः रोगाति (श्या
त स्तो॥ श्रीगणेशाय नमः॥ अलक्षणः सका...
...प्रकृतिः प्रकृतेर्महान्
महतोऽहंकारः अहंकाराच्छब्दः शब्दादाकाशः
आकाशाद्वायुः वायोस्तेजः तेजस
आपः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या ओष-
धयः ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नाद्रेतः रेत-
सः पुरुषः॥ इति श्रुतेः॥

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रति-
रूपो बभूव एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रू-
पं प्रतिरूपो बहिश्च॥१॥ वायुर्यथैको ...
पूर्ववत्॥२॥ सूर्यो यथैको ... पूर्ववत्॥३॥

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो भवसि विश्व-
तो मुखः॥ श्रु॰ कां॰ १० प्र॰ ४ मं॰ २७

द्वावाव ब्रह्मणो रूपे मूर्तं चामूर्तं चेति

श्रीमतेरामानुजायनमः ॥ कुमंडस्यबीनीमपेउभज
ादिसकमेकसेट अनिट ञिडक्यकोअदलाव
लोकरनामोलदेनालेमाश्रोजनतर्पणका
तीचउभयपादसकर्मकअनिट श्रोजश्रो
टेप करनाइच्छाकरनाश्रोगोत्ति ॥७॥
श्रीजपाकेश्रीपकोनामाजहिसापा
मपीजमीहिसाकरनाविजवन्ध
नेवाधनेमेवर्ततिहै सिनाति ॥९॥
सानितेस्कजअप्राल्पवनेस्कपैरना
उद्धारकरनाप्रजवन्धनेवांधनेपे
वर्ततिहै प्रनाति प्रनीते प्रयाव प्रपेठ
कृत्रपावे पावकरनादन्नहिंसापाप
हत्रहिसापापमारनाहिसाकर

श्रीः

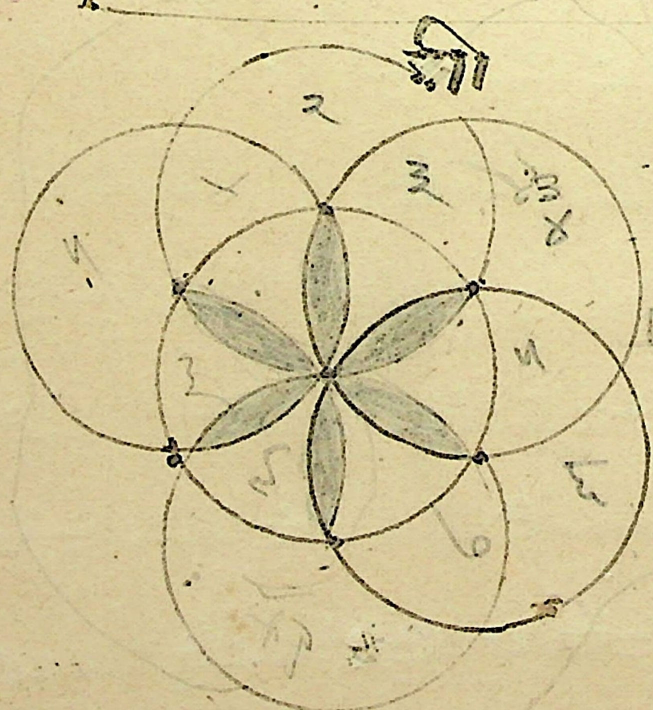
कण्ठ द्व्यापमतपोगोलव्युत्पतिसि
द्धये। पन्नमटेनाविदुषाः रचितस्फुटस
मोदं। ब्रह्म विनान यति सततं दुखं च मिश्रेवि
नामार्तो । देन विनानन स्वतितमसमुरूध भ
रं विना सन्तोषेण विनान लोभलहरी च्या
धिस्व वर्ण्यं वीना दरोदुगते प्यानपाति
सततं क्रोकध दृष्टि वीना

श्रीमते रामानुजाय नमः रामचंद्र

पन्न: श्रीकृष्णायनमः

चोरयति चोरयतः चोरयन्ति चोरयसि चोरय
थः चोरयथ चोरयामि चोरयावः चोरयामः
चोरयते चोरयेते चोरयन्ते चोरयसे चोरये
थे चोरयध्वे चोरये चोरयावहे
चोरयामहे चोरयिता चोरयितारौ
चोरयितारः चोरयितासि चोरयिता
स्थः चोरयितास्मि चोरयितास्वः चो
रयितास्मः कुथ कु ग रा
कपयते कपयेते कपयन्ते कपयसे
कपयेथे कपयध्वे कपये कपयाव
हे कपयामहे कपयाञ्चकार कपयाञ्चक्रतुः
कपयाञ्चकुः कपयाञ्चकर्थ चक्रथुः

सामानाधिकरणत्वं नाम कौं एकार्थनीष्ठत्व
मेकविभक्तिकत्वं सामानाधिकरणत्वं साका
पं कि नाम सकत इति एका लिङ्गत्वं
नाम किं लिङ्ग ते चिह्न ते सा पंते पतनतलि
ङ्गम् अर्थत्वं नाम किं प्रकृतिप्रत्ययौ रेका
विभावेन लो कार्प्पनीषयक बोध ज
नकत्वम् अर्थत्वं



दोलेदोदोदे

97

गतवर्षीणिवर्तव्यमजन्मतस्मसमन्वितंद्रुप

गतासमापादयुताप्रकृतिषुसमागता
तखवेदाप्

गहपद्धिवहेनकन्यकानामहसगं ५

श्री गणेशाय नमः निधानहृदिविष्ण्वेषं

दिक श्री अशो

जगर्दसंख्या

ली श्रीगणेशायनमः

ली श्रीमतेरामानुजायनमः

श्रीमतेरामानुजाय

वर्णेवस्यंतथाता
रलोमिश्रणः
हमैत्रकमरेणा

श्रीमतेराम

मैत्रभक्तटचना
द्वितेचागशासिका

स्पष्टपत्रक ॥ २ ॥ ३ ॥

पत्र ग्रंथमें लिखा केनीचे जो स्पष्ट अंक है
[illegible] है कि [illegible]
समय [illegible] है [illegible]

शु.	[illegible]	बु.	[illegible]	र	मं	गु	श
						५	३
स्प.	से.	मे.	पि.	धा.	भा.		
३ ८ १२ २८ ३६	११ ८ १२ २८ ३६	१२ ८ १२ ३२ ३६	१४ ८ १२ ३२ ३६	१० ८ १२ ३२ ३६	२१ ८ १२ ३२ ३६	२६ [illegible] [illegible] ३२ ३६	२८ ६ १२ २८ ३६
१५ २४	१५ ३२	१५ ३५	१५ ३५	१५ ३८	१५ ४०	१५ ७	१५ ५
स्प.	स्प.	[illegible]	स्प.	स्प.	स्प.	स्प.	स्प.
२० ६ ५ ५	०० ६ ५ ५	० ६ ५ ५	८ ६ ५ ५	४ ६ ५ ५	० ६ ५ ५	७० ६ ५ ५	६ ५ ५
१५ ६०	१५ ६८	१५ ६८	१५ ७८	१५ ७५	१५ ७८	१५ ८२	१ ८८
३८ ८ १२ ३६ ३६	४१ ८ १२ ३६ ३६	४८ ८ १२ ३६ ३६	५० ८ १२ ३६ ३६	५३ ८ १२ ३६ ३६	५१ ८ १२ ३६ ३६	६२ ८ १२ ३६ ३६	६८ ८ १२ ३६ ३६

अथ ... चक्रम् २०

उ	सि.	स.	म	वि	धा	भा	भ
९ ०२ ०३	८ ५ ७०	९ ८ ००	०८ २ ०८	[illegible] ४ ६०	०० ६ ६०	०० ८ ७०	०० १० १००
[illegible]	१९ [illegible]	१९ ५०	[illegible] ५०	१९ ५९	१९ ५९	[illegible]	[illegible]
स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.
०० ६	६ ६	६ ६	८ ६	९० ६	६ ६	२ ६	०० ६

अथ सिद्धान्तराशिचक्रम्

सि.	स.	म.	वि.	धा.	भा	भ	ह
९ ४ १०	९ ५ २०	१० २ १०	०० ४ २०	०० ७ ००	०० ६ १०	०० ११ २०	९ २ ००
१८ ५५	१९ ५७	१९ ५६	१८ ५६	१८ ५७	१८ ५७	१९ ५८	१९ ६०
स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.
४ १६	११ ६	१ १६	६ ६	९ ६	१० १६	१८ ६	०० ६

अथ वर्षे कर्तन शभो वक्रम

सूर्य स्पष्ट की राशि अंश कला विकला
मे यो य के मा स दिन घ टी पल
जो 5 दे ना जो पल साठ से जादे
हो तो साठ का भाग ले कर घटी मे
घटी साठ से जादे हो तो साठ
का भाग ले कर अंश मे अंश ३०
से जादे हो तो तीस का भाग दे कर
राशि मे राशि बारह से जादे हो तो
१२ का भाग ले कर भोग करे
वर्ष मे ३० अंश और २ घटि राशि का अं
क १२ हो तो ०० हर न कर दे

धारस्यापि बस्यै तैहित्वा [illegible]

त्या ग हेहिं त्वा॥ ओहाङ् ५ ग ता से

हत्वा॥ ६ कु ५ ऽर तते हे उ कृत्वा॥

स्म स्म रतो से स्मारं॥ पापा ने हे पापा॥

भुज [illegible] ने से भो जम्म॥ कृ न तो से

क्षावं॥ भुजग्वर्दनै है॥ ५ ति कृदन्त

प्रकरणं समाप्तम्॥

भुजपालनाव्यवहारयोः से म

लविभुजः॥ ध जधरणोसमहि धृ॥

कुध्रः॥ चर गतिभक्षणयोः से कुह

चरः॥ भिक्षाचरः॥ सेनाचरः॥ ग्रा

दापचरः॥ ६ कृञ् करणे से हेतु

रास्करी विद्या॥ ताच्छील्य आङ्

करः॥ अनुकूलता वचनकरः॥

गजेन्जलद ालि दर्शितोदकर
शीलं र तलध्वन तपूर्लं वेण
वाहेर सालं क्ष जजन तुलस
लकामिनीकेलिलोलं तस म
र तलसौमालं नौमि गोकु
लवालम् ॥१॥ नीलाम्बुजश्याम
लकोमलाङ्गं सीतासमारोपित
वामभागं पाणौ महाशायक
चारुचापं नमामि रामं रघु
वंशनाथम् ॥२॥ प्रनतजन
पालः क्रूर भू पाल कालः स्तस्ए
तरत मालः श्यामलो नन्द वालः
वरु किरण विशालः सर्व पाति
प्र वाल स जयति ध तमालः
पांडु ने कुसि भालः ॥३॥

आनन्द... ...लोकानां
मा... ...वलितकं... ...तवंदे
...पादनामुकंदमाक... लिहा
...तौ घमाकारमाकलयताभुम
(मंतरं तः॥१॥ चिदानन्दाकारं जं
...दरुचिसारं श्रुतिगिरां ब्रजस्त्री
णां हारं भवजलधिपारं कृतधि
यां विहर्तुं भूभारं विदिधदवतता
रं मुहुरहो• ग्रहोवारं वारं
जतिकुशलारं भक्तितः॥२॥
वेदान्तदीपग्रंथेलिखितमिद
म्॥

ष्टः५॰उपसर्गे कृःस्मे के रणी से॰ग्लाकरः॥
॰अवे ३ पस॰गेन्ह कौले वनसंतरणेः से
॰अवतारः॥स्तृ कृ॰आवरणे से॰अव
स्तारः॥न्न ज्रप्र प्नुवी से॰अपामार्गः॥
इकृञ् करणे से इ कारः॥मृ कारः॥
पापाते ई बन्धानः॥भ्रु बान॥दुषानः॥
इदाञ् दाने से॰अलंदत्वा॥पापाने से
खलुपीत्वा॥इकृञ् करणे से पाका
र्तृत॥॰अलंकारः॥ष्ठी ५॰ स्वप्ने से सुप्त्वि
त्वा॥लिख अक्षरविन्यासे से लिखि
त्वा॥लेखित्वा॥वृतु वर्तने से वर्ति
त्वा॥श्रिञ् सेवायाम् से से वि त्वा॥
इ घु ५॰ रूव पावाम् से रचित्वा॥मृज
॰अवने से मृक्त्वा॥पूञ उपवाने
से पावित्वा॥पूत्वा॥दिवु क्रीडाया
म से देवित्वा॥द्यूत्वा॥दुधाञ्

उपउपसर्गे [illegible] स्ववनस णाणा याः
सेउ पत्रिमम्॥ याच् याञ्चायाम् सेया
चञ्चना॥ यतीप्रयत्ने से यत्नः॥ विप्रश्न
वेप्राने से विप्रश्नः॥ प्रच्छ ज्ञिप्सायाम्
से प्रश्नः॥ रक्ष रक्षणे से रक्ष्णः॥ निस्व
पप्रापे से स्वप्नः॥ ध्यै चिन्तायाम् से
प्रध्यैः॥ उपाध्यैः॥ डुकृञ् करणे से कृ
त्तः॥ [illegible] कीर्तिः॥ लूञ् छेदने से लूनिः॥ धूञ्
कंपने से धूनिः॥ पूञ् पवने से पूनिः॥ पत्लृ प
तने से समापत्॥ विपत्॥ आपत्॥ समापत्तिः
विपत्तिः॥ आपत्तिः॥ ज्वर रोगे से ज्वरः॥ त्वर
वेगे से तूः॥ [illegible] अव रक्षणे से ऊः॥ श्रिवु तन्तु
ते स्रुः॥ मव बंधने से मूः॥ इष इच्छायां
से इच्छा॥ डुकृञ् करणे से चिकी
र्षा॥ पुत्र काम्या॥ ईह चेष्टायाम् से ईहा॥
डुकृञ् करणे से कारणा॥ हृञ् हरणे से हा
रणा॥ हस हसने से हसितम्॥ हसनम्॥ दन्त
उपपदविधिदिर्द धि करणे से दन्तच्छदः॥

तुदेर्धातोः ... तोत्रम्॥ षिच क्षर
णे सेत्रम्॥ से सेक्त्रम्॥ पत्लृ पतने
से पत्रम्॥ दंश दशने से दंष्ट्रा॥ णह बं
धने से नद्ध्री॥ ऋ गतौ से अरित्रम्॥
लूञ् छेदने से लवित्रम्॥ धूञ् कं
पने से धवित्रम्॥ ~~[illegible]~~ षूङ् प्रा
णिप्रसवे से सवित्रम्॥ खनु अव
दारणे से खनित्रम्॥ षह मर्षणे
से सहित्रम्॥ चर गतिभक्षणयोः से
चरित्रम्॥ पूञ् पवने से पवि
त्रम्॥ इ॰ ~~[illegible]~~ चिञ् चयने से निकाय्यः
[illegible]य्यः॥ गोमयनिकायः॥ चयः॥ जि जये
से जयः॥ कृ विक्षेपे से करः॥ गॄ निग
रणे से गरः॥ युजिर् योगे से यवः॥
लूञ् छेदने से लवः॥ ष्टुञ् स्तुतौ से स्तवः॥
पूञ् पवने से पवः॥ [illegible]
तौ से [illegible]॥ वि उपसर्ग हनन्हिंसागत्यो
से विघ्नः॥

जलस्थलोपांगवाचि जन्म कुटि दुघा

चने से भिन्नाकः॥ कुट कुटुंसे कुटुंद्रः॥

पृथुंपेसे लएटाकः॥ वृजवरणोसे वराकः॥ इषु

इच्छायाम् से चिकीर्षुः॥ श्रु जस्तु तो संग्र।

शंसुः॥ भिक्षु याचने से भिक्षुः॥ भाज दि

प्तौ से विभ्राट्विभ्राड्॥ धुर्वी हिंसायाम् से

धूः॥ द्युत दीप्तौ से विद्युत्॥ ऊर्ज [illegible]

जतो से ऊर्क पूरणे पूर्णोः से पूः॥

जुज तो से जूः॥ ग्रावन्वा पर्वत

स्तुतो से ग्रावस्तुत्॥ वच परि भाषणे

से वाक्॥ प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् से प्राड्॥ कु

~~कुटु से कटप्रूः॥~~ जगतो से हू॥ कुदि

पृ वने से कटप्रूः॥ श्रि ज से श्री यच्छे

श्रीः॥ दाप् लवने से दात्रम्॥ पद गतौ सायाम्

मूसे [illegible]॥ जिर चोजे वे दे ज्ञम

[illegible] त्रम्॥ कुज तो से [illegible] त्रम्।

मन्त्रोऽग्र्य प्रभाषणात् से मन्त्री ॥ बुध अवगमने से
बुधः ॥ (कृष विलेखने) [illegible] से कृषकः ॥ ज्ञा अवबोधने
से ज्ञः ॥ प्री तर्पणे कान्तौ च से प्रियः ॥ कृ वि
क्षेपे से किरः ॥ ज्ञा अवबोधने से ज्ञः ॥ ग्ले
हर्षक्षये से ग्लः ॥ गाह उपादाने से ग्राहः ॥
डुकृञ् करणे से कुम्भकारः ॥ डुदाञ् दाने से
गोदः ॥ धनदः ॥ कम्बलदः ॥ गोसंप्रदायः ॥
राज कंपने से जनमेजयः ॥ सुपूर्वक ... हिंसा
[illegible]न से सुप्रामा [illegible] से ध्वंस [illegible]
अधःपतने से उखास्रत् ॥ पर्णध्व
त् ॥ वाहभ्रट् ॥ भुज अभ्यवहारे से [illegible]
(दर्शनीयमात्मानं मन्यते)
[illegible] भोजी ॥ मन ज्ञाने से दर्शनीयमा
(पण्डितमात्मानं मन्यते)
नी ॥ पण्डितमानी ॥ कालिंमन्या ॥ जनि प्रा
दुर्भावे से सरसिजम् ॥ सरोजम् ॥ भुज
कौटिल्ये से भुजगः ॥ उष्णिहं [illegible] से उ
ष्णिक् ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
(नाम)
[illegible] से [illegible] ॥ [illegible] धारणा [illegible]
[illegible] हितम् ॥

एध वृद्धौ से एधितव्यम्॥ एधितव्यम्॥ एध
नीयम्॥ चिञ् चयने से चेतव्यः॥ चयनीयः॥
डुपचष् पाके से पचेलिमाः माषाः॥ भिदिर्
विदारणे से भिदेलिमाः सरलाः॥ ष्णा शौ
चे से स्नानीयम्॥ डुदाञ् दाने से दानीयो वि
प्रः॥ चिञ् चयने से चेयम्॥ डुदाञ् दाने से
देयम्॥ ग्लै हर्षक्षये से ग्लेयम्॥ घ्रा गन्धो
पादाने से घ्रेयम्॥ डुलभष् प्राप्तौ से लभ्यः॥
गतौ से इत्यः॥ ष्टुञ् स्तुतौ से स्तुत्यः॥ शासु
अनुशिष्टौ से शिष्यः॥ वृञ् वरणे से वृत्यः॥
दृङ् आदरे से आदृत्यः॥ जुषी प्रीतिसेवनयोः
से जुष्यः॥ मृजूष् शुद्धौ से मृज्यः॥ डुकृञ् क
रणे से कार्यम्॥ हृञ् हरणे से हार्यम्॥ धृञ्
धारणे से धार्यम्॥ मृजूष् शुद्धौ से मार्ग्यः॥ भु
ज पालनाभ्यवहारयोः से भोज्यम्॥ भो
ग्यम्॥ डुकृञ् करणे से कारकः॥ कर्ता॥
टुनदि समृद्धौ से नन्दनः॥ अर्द गतौ याचने च
से जनार्दनः॥ लूञ् छेदने से लवणः॥ गाहू उपा
दाने से गाहि॥ शाजतिनिवृत्तौ से स्यायी॥

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः
[illegible] स एव वक्ता [illegible] दर्शनी
यः सर्वे गुणाः कां·चनमा·श्र
यंति ॥१७॥ आश्रयंते इत्यपि
पाठः ॥

तनधनसहजसुषसुतरिपुजायामृत्युधर्म
कर्मआयव्यय इति द्वादश भावा:

लग्नसे सरीरकी वार्ता कहनी दूसरे घर से
धनकी तीसरे घरसे भाई की चौथे घर से
माताकी और रूपने सरीरकै सुख
की बात हपांचवें घरसे विद्या के और
रसज्ञान कि बात कहनी ६ छठे घर से
शत्रु कि और रोग कि बात कहनी सातें ७
वे घर से स्त्री की बात कहनी ८ आठवें
से आयु की बात देखनी ९ नवें
से तीर्थ व्रत धर्म की १० घर से राजा की
और पिता कि ११ से लाभ की १२
वे से खर्च की कहनी।

९ घर को नाम भाग्य [illegible] है

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

ॐ ऐं स्वाहा ॥ ये मंत्र सरस्व
ती का है इसको सूर्य के
ग्रहण पे जिह्वा पर लि
खना मालकांगणी के 35
तेल से लिखना कलम
अनार की से फेर नित्य ज
पना सिद्धि के वास्ते सवा
दस हजार जप देवता वेद
तक पढ़ः नहीं पया से ख्या
इस मंत्र से बुद्धि विवेक बढ़ि
जाती है इतना ग्रहण होवे
इतने इस मंत्र को कहना [illegible]
मालकांगणी का तेल इस
प्रकार निकालना एक 5 घा
खोद के उसमा एक दह लोटे
माल [illegible] कांगणी वाप का को

ग्राधिकारचक्रम्

	स्व॰	मि॰	स॰	श॰	
ह॰	१५ ००	११ १५	७ ३०	३ ४५	ह॰
द्रे॰	१० ००	७ ३०	५ ००	२ ३०	द्रे॰
न॰	५ ००	३ ४५	२ ३०	१ १५	न॰
उ॰	३० ००	२२ ३०	१५ ००	७ ३०	उ॰

सेधिष्यतः सेधिष्यन्ति सेधिष्यसि सेधिष्य
थः सेधिष्यथ सेधिष्यामि सेधिष्यावः से
धिष्यामः ॥ लोट् ॥ सेधतु सेधतात् से
...

ऽतत सातत्यगमने ॥ २ ॥ लट् ॥ ऽतति ऽत
ततः ऽतन्ति ऽतसि ऽततथः ऽतथ
ऽतामि ऽतावः ऽतामः ॥ लिट् ॥
ऽतात ऽतातुः ऽतातुः ऽतातिथ ऽतात
थुः ऽतात ऽतात ऽतातिव ऽतातिम ॥
लुट् ॥ ऽततिता ऽततितारौ ऽततितारः
ऽततितासि ऽततितास्थः ऽततितास्थ
ऽततितास्मि ऽततितास्वः ऽततितास्मः
...ः ऽततिष्यति ऽततिष्यतः ऽततिष्यन्ति
ऽततिष्यसि ऽततिष्यथः ऽततिष्यथ ऽत
तिष्यामि ऽततिष्यावः ऽततिष्यामः
लोट् ऽततु ऽततात् ऽतताम् ऽत
तन्तु ऽतत ऽततात ऽततम् ऽत
36 तत ऽततानि ऽतताव ऽततामः

ऽतातत ऽततात् ...

प्राधिकारचक्रम्					
	स्व॰	मि॰	स॰	प॰	१२१ग्र

१०१ गत्यास्व गत्यास्म भुङ्

~~प्रातित् प्रातिष्टाम प्रातिषुः~~

प्रातीत् ~~प्रातीष्टाम प्राती~~ प्रातिष्टाम्
प्रातिषुः प्रातीः प्रातिष्टम प्रातिष्ट प्रातिषं
प्रातिष्व प्रातिष्म ॥ लृङ् ॥ प्रातिष्यत प्राति
ष्यतां प्रातिष्यन् प्रातिष्यः प्रातिष्यत प्रा
तिष्यतं प्रातिष्यत प्रातिषं प्रातिष्या
व प्रातिष्याम ॥ षिधु गत्याम् ॥ सेधति
सेधतः सेधन्ति सेधसि सेधथः सेधथ से
धामि सेधाव सेधाम ॥ लिट् ॥ सिषेध
सिषिधतुः सिषिधुः सिषेधिथ सिषिध
थुः सिषिध सिषेध सिषिधिव सि
षिधिम ॥ लुट् ॥ सेधिता सेधितारौ
सेधितारः सेधितासि सेधितास्थः से
धितास्थ सेधितास्मि सेधितास्व
सेधितास्म ॥ लृट् ॥ सेधिष्यति ॥

सेधिष्यन्तः सेधिष्यन्ति सेधिष्यसि सेधिष्यथः सेधिष्यथ सेधिष्यामि सेधिष्यावः सेधिष्यामः ॥ लोट् ॥ सेधतु सेधतात् सेधताम् सेधन्तु सेध सेधतात् सेधतम् सेधत सेधानि सेधाव सेधाम ॥ लङ् ॥

१ प्रसेधत् २ प्रसेधताम् ३ प्रसेधन् ४ प्रसेधः ५ प्रसेधतम् ६ प्रसेधत ७ प्रसेधम् ८ प्रसेधाव ९ प्रसेधाम ॥ लिङ् ॥ सेधेत् सेधेताम् सेधेयुः सेधेः सेधेतम् सेधेत सेधेयम् सेधेव सेधेम ॥ आशिर्लिङ् ॥

~~सिध्यात् सिध्या~~

सिध्यात् सिध्यास्ताम् सिध्यासुः सिध्याः सिध्यास्तम् सिध्यास्त सिध्यासम् सिध्यास्व सिध्यास्म ॥ लुङ् ॥ प्रसेधीत् प्रसेधिषाम् प्रसेधिषुः प्रसेधीः प्रसेधिष्टम् प्रसेधिष्ट प्रसेधिषम् प्रसेधिष्व प्रसेधिष्म ॥ लृङ् ॥ प्रसेधिष्यत् प्रसेधिष्यताम् प्रसेधिष्यन् प्रसेधिष्यः प्रसे

षिषतम् अससे षिषत अससे षिषाम असे
षिषाव असेषिष्याम॥ चितिसंज्ञा
ने॥ सम्यक् ज्ञानम् संज्ञान मतन्मि न्
संज्ञाने॥ लट्॥ चेतति चेततः चेतन्ति
चेतसि चेततः चेतथ चेतामि चे
तावः चेतामः॥ लिट्॥ चिचेत चिचि
ततुः चिचितु चिचेतिथ चिचित
थुः चिचित चिचेत चिचितिव चि
चितिम॥ लुट् चेतिता चेतिता
रौ चेतितारः चेतितासि चे
तितास्थः चेतितास्थ चेतिता
स्मि चेतितास्वः चेतितास्मः
॥ लृट्॥ चेतिष्यति चेतिष्यतः चेति
ष्यन्ति चेतिष्यसि चेतिष्यथः चे
तिष्यथ चेतिष्यामि चेतिष्यावः
चेतिष्यामः॥ लोट्॥ चेततु चेत

तात् चेततताम् चेततु चेत चेततात् चेतत
चेतत चेतानि चेताव चेताम लिङ्
प्र चेतत् प्रचेतताम् प्रचेत
न् प्र चेत प्र चेततं प्रचे
तत प्र चेतम् प्र चेताव प्र
चेताम॥ लिङ्॥ [illegible] चेतेत् चेते
ताम् चेतेयुः चेते चेतेतम् चेतेत
चेतेयं चेतेव चेतेम॥ आशी लिङ्
चित्यात् चित्यास्ताम् चित्या 30
सुः चित्या चित्यास्तं चित्यास्त
चित्यासं चित्यास्व चित्यास्म
॥लुङ्॥ प्रचेतित् प्रचेतिष्ट
म् प्रचेतिषुः प्रचेतीः प्रचेतिष्टं
प्र चेतिष्ट प्रचेतिषं प्रचेतिस्व
प्र चेतिस्म ~~प्रचेतिष्यत् प्रचे~~

लृङ्- प्रचेतिष्यत् प्रचेतिष्यताम्
प्रचेतिष्यन् प्रचेतिष्य प्रचेति
ष्यतं प्रचेतिष्यत प्रचेतिषं
प्रचेतिष्याव प्रचेतिष्याम

करनाल का पता राम प्रसा
द वकील जैनी के प
ड़ोस

ल:	चं:	म:	बु:	गु:	शु:
६	००	४	१	३	५
२०	२१	२२	२३	२६	५
३३	४४	२१	२१	८	४८
२४	३६	१८	५२	४६	५१

चंद्र ग०
८५५
३६

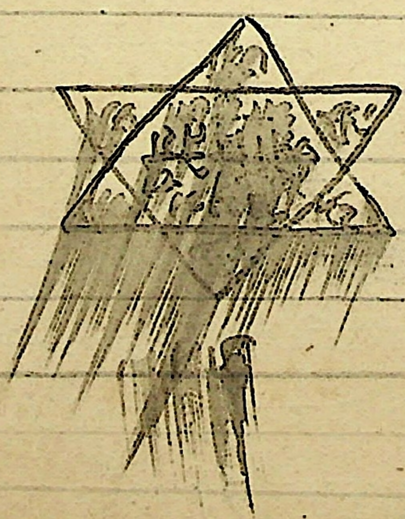
[illegible] रमन्ते साविग्रहः

७ प्रथाजन्तप लिङ्गाः रामः रमपत्ति लोकान् [illegible]पतीति राम:

योगि

प द्वारमंते [illegible] ॰ प्रास्मि न्निति रामः लोकों कोजो
रमण करवाव कूडा करवाव सो कहिये राम ॰ प्रपचना
रमनकरतेहैं योगिजन जिसके विषसो कहिये राम
[illegible] घट घडा पट वस्त्र स्तंभ खंभा कुंभ घडा ग्राम गाम
पुरुष ॰ प्राप्तमित्रा त्तुण ब्रं सव दं जाना [illegible]तीति
ब्राह्मण ः ब्रं त्तुनवेद जो गाय न्निति सको जो जाण ॰ सो
कहिये ब्राह्मण न्निप शब्द त्तताव पुष्पत्रापत्ते
[illegible]ती [illegible] न्निपः पटू से जो रच्चा करे सो कहिये न्नृ
न्निप ॥ वैश्य विशन्ति उपदि श्राति भोजनादि जन्य
[illegible] धारण इति विश्राः विश्राण वैश्यः विशल व्याप्तौ
धातु से वैश्य होता है शूद्रः शोकात् द्रवतीति
शूद्रः शोकसे जो डरे सो कहिये शूद्रः शुच
शोके धातु से शूद्र होता है सर्व विश्वं संसार
उभ नाम दोका है पूर्व पहला ॰ पर परला ॰ प्रवर
नवर ॰ प्रवर नहि जो श्रेष्ठ हो सो ॰ कहिये ॰ प्रवर
दच्छिण दिशा उत्तर ॰ प्रपर ॰ पधर स्वः ॰ प्रत्तर प्रप्य
मद्धि तियत्वाति पचतु र्थी निर्जर नजरः निर्जरः नहि
जो वृद्ध हो सो निर्जर यह ॰ शब्द ॰ प्रकारान्त वाचि है
विश्वपा शब्द विश्वं पातीति विश्वपा विश्व जो संसार ति
स कि जो रच्छा करे सो कहिये विश्वपाः शंखध्माः
शंखं धमतीति शंखध्माः शंखन जो धमा न बजाव
जाव सो कहिये शंखध्माः हाः यह ॰ प्राकारान्त
वाचि शब्द हैं ॥

[illegible]१५७६ 39



१	१।	१४	१७॥	२७	३३।।।
२	२॥	१५	१८।।।	२८	३५
३	३।।।	१६	२०	२९	३६।
४	५	१७	२१।	३०	३७॥
५	६।	१८	२२॥	३१	३८।।।
६	७॥	१९	२३।।।	३२	४०
७	८।।।	२०	२५	३३	४१।
८	१०	२१	२६।	३४	४२॥
९	११।	२२	२७॥	३५	४३।।।
१०	१२॥	२३	२८।।।	३६	४५
११	१३।।।	२४	३०	३७	४६।
१२	१५	२५	३१।	३८	४७॥
१३	१६।	२६	३२॥	३९	४८।।।

गज सवा पे है

40

४०	५०	५३	६६।	६६	८२॥
४१	५१।	५४	६७॥	६७	८३।।।
४२	५२॥	५५	६८।।।	६८	८५
४३	५३।।।	५६	७०	६९	८६।
४४	५५	५७	७१।	७०	८७॥
४५	५६।	५८	७२॥	७१	८८।।।
४६	५७॥	५९	७३।।।	७२	९०
४७	५८।।।	६०	७५	७३	९१।
४८	६०	६१	७६।	७४	९२॥
४९	६१।	६२	७७॥	७५	९३।।।
५०	६२॥	६३	७८।।।	७६	९५
५१	६३।।।	६४	८०	७७	९६।
५२	६५	६५	८१।	७८	९७॥

७९	९८।।।	९४	११७॥		ञ	४
८०	१००	९५	११८।।।			
८१	१०१।	९६	१२०			
८२	१०२॥	९७	१२१।			
८३	१०३।।।	९८	१२२॥			
८४	१०५	९९	१२३।।।			41
८५	१०६।	१००	१२५			
८६	१०७॥	[illegible]				
८७	१०८।।।	[illegible]				
८८	११०	[illegible]				
८९	१११।	[illegible]				
९०	११२॥	[illegible]				
९१	११३।।।	[illegible]				
९२	११५	[illegible]				
९३	११६।	[illegible]				

श्रीमते रामानुजाय नमः

५५ ४७८७९५७० श्रीः

यतिशेषो भवेद्धौरेजामित्रस्य चयाभु
नेवेधशेषस्तु विष्याख्ये देशेनान्येषु
केषु चा ॥ श्रीमते रामानुजायन
मः श्रीगणेशाय नमः विघ्नेषते कृपाधि

यतिशेषो भवेद्धौरेजामित्रस्य चयाभु

श्रीः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीः

श्रीमतेरामानुजायनमः

प्रातिपदि

श्रीमते

प्रातिपदिकत्वंनामकिं, एकार्थनीय
[illegible]कविमतिकत्वं सामानाधिक
सामानाधिकरणत्वंनामकिं श्रीमते
आ

श्रीः



भू सत्तायाम् परस्मैपदि सकर्मक
सेट् भवति बभूव भविता भवि
ष्यति भवतु अभवत् भवेत्
भूयात् अभूत् अभविष्यत्
अत सातत्यगमने परस्मैपदि सक
र्मक सेट् अतति आत आतुः आत
अतिता अतिता अतिष्यति अततु आ
तत् अतेत् अत्यात् आतीत्
आतिष्यत् षिधु गत्याम्
सेधति सिषेध सेधिता
सेधिता सेधिष्यति

सेधतु ग्म सेधत सेधेत सिध्यात

ग्मसेधीत ग्मसेधीस्यत

एवं चिति संज्ञाने शुच शोके

गद व्यक्तायां वाचि गद

ग्व्यक्तेषाव्द इत्यादि

समक्षे ग्म र्वेउ जायाम ग्रेप

गतो कटे वर्षावर्णयो गवुर

हाके हिवप तप संतापे

ग्म पाद गो वेप पाने ग्लेव

ब सपे द कोपि स्मे भपाव

ण गर लम मिर

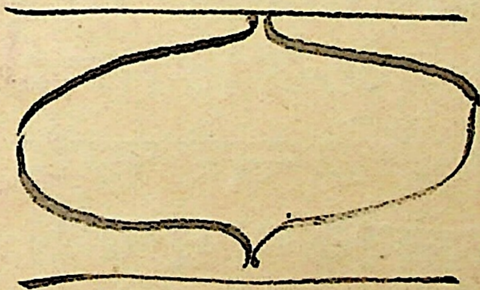
ओं३म् ५५

एधवृद्धौ अकर्मक आत्मनेपदि
सेट एधते एधेते

श्रीः श्री
श्री

मोहं नश्लबिना

श्रीमते रामानुजाय नमः



चलः कुराजसे गायाम गृहगोः
त्रिपञ्चकम यानेचौरं ब्रतेरोगं
त्यजेन्मृत्युकर गृहे ॥१॥ छ॥ छ॥
ब्रतेविवर्जयेद्देव गंगृहगोऽ
त्रिपञ्चकमयात्राणामसन्ने
चौरश्चौविगादेमृत्रिपञ्च
कम॥१॥ छ॥ छ॥ श्रीमतेरामाय
नामनमः चूरेह
भोजनाननेघट
लिमेखेगरवौप
विजयक्षुद्धिभोगत

श्रीमते रामचन्द्राय
श्रीगणेशाय नमः
नमः
श्रीम

प्रभगृहस्यवासेरमृयु
रमीनकन्याकातुला वृषभेमिलग्न
केहिराजमेलवेध्रुमेचरे अपि
मृदुभिः ॥२॥ मिथुनकुम्भमृगालि
वृषाजगेमिथुनगेपिरवोत्रि
लवेभुचेगमलिमृगाजगते
धरपीडनमभवतिकार्ति
कबोभमधुलापा॥३॥ छ

श्रीमति रमातु जी श्री श्री

श्री:

अपवीग

आरोग्यंतर णि विमल तो भीम ॥

आरोग्यंतर णि विमलताम
मौमंअतपोदपम बुद्धि प्रीतकरा
त्मजःसुर गरु राजे सुखं मागेव

सौरी सम्पे सुतं राहु र मंपं केत
न सारं सात ब्रह्मा गेसरी
अष्ट तपो दे वाः सदा पांतु कः ॥१॥

श्री तां वर दा सेन लिखितम

श्री

श्री तां वर दा

श्रीः

अथौ विधौ वधुमुखेक्षणानां
नीवासेकेचौ सुधामिति बुधा
वीबुधा वदन्ति हारं हारं चपल
तैवमौखं कथं स्यात् कैठे सतां
वसति कीर्त्ति मदन्ति संतः॥१॥
एकस्मिन्नवसरे कुरुक्षेत्रान्त
र्वर्तमाने पृथुदके बहूनां
पंडितानां समाजे उभयोः पं
डितयोः किंचित् संवादमभू
त् किंतु संवाद एकेन एकं
मतीदं स्तनंरं द नंहति हति

किं भो मित्र सुधा कुत्र वसति
तेन तं प्रति इत्युक्तं भो मित्र सुधा
अब्धौ वसति यदि सुधा ऽ
ब्धौ वसति तर्हि खारं कथं स्यात् तदा
रताकरापि न संभवति तत्रापि सु
धा नास्ति पुनः पृष्टं भो मित्र सुधा
कुत्र वसति सुधा विधौ वसति
यदि सुधा विधौ वसति तर्हि रपं क
थं स्यात् तदा पताकरापि न संभवति
तत्रापि सुधा नास्ति पुनः पृष्टं भो मि
46 त्र सुधा कुत्र वसति सुकरध्याव
धुमखे वसति यदि सुधा न धुमखे
वसति तर्हि ... कथं स्यात्

पुनप वं भोमिनसुधाकुनवसति

सुधाकणि नं निवासे वसति पदि

सुधाकणि नं निवासे वसति तदि

विषंकपं स्यात षितां कदापि

न सं भवति न अपि सुधा नास्ति

पुनप षं भो मि नसुधाकुनवस

ति सुधा भवतां सह प्राणं प्रा

लणनां कंठे वसति इति किन

वदंति इत्यन्वयः

कीतों वर दस स्पो दमु लो कप

२२६

श्रीः

सर्वेषां कृतिनां चरन्ति यस्य कैंकर्याने ष्वा हरे श्रीरामानुज योगि नापकमणि श्रीपाद पद्मालया ... चरम श्लोकत्व संध्यायीनो वंद्याभागवतोतमा प्रतिदिनं कुर्वन्तु तन्मंगलम् ॥१॥ श्री कृष्ण परमात्मने नमः

मोहं ब्र सर्वीनानयाति सततं दुखं च मित्रं वीना मार्तण्डे नवीनानन स्यातितमः ... मेदं वीना संतोषे ... वीना नलो भलकी

८२६ ४७

पाँत

उमाति उनीत पनति उनासि उनीप उनी

पउनासि उनीव उनीम उनीते पनीते

उनते उनीसे उनापे उनीध्ये पुने पनीव

हे उनीमहे उपाव उपवत उपुवि पा

उपुवपु: उउवउवाव पुउवीव पउ ि

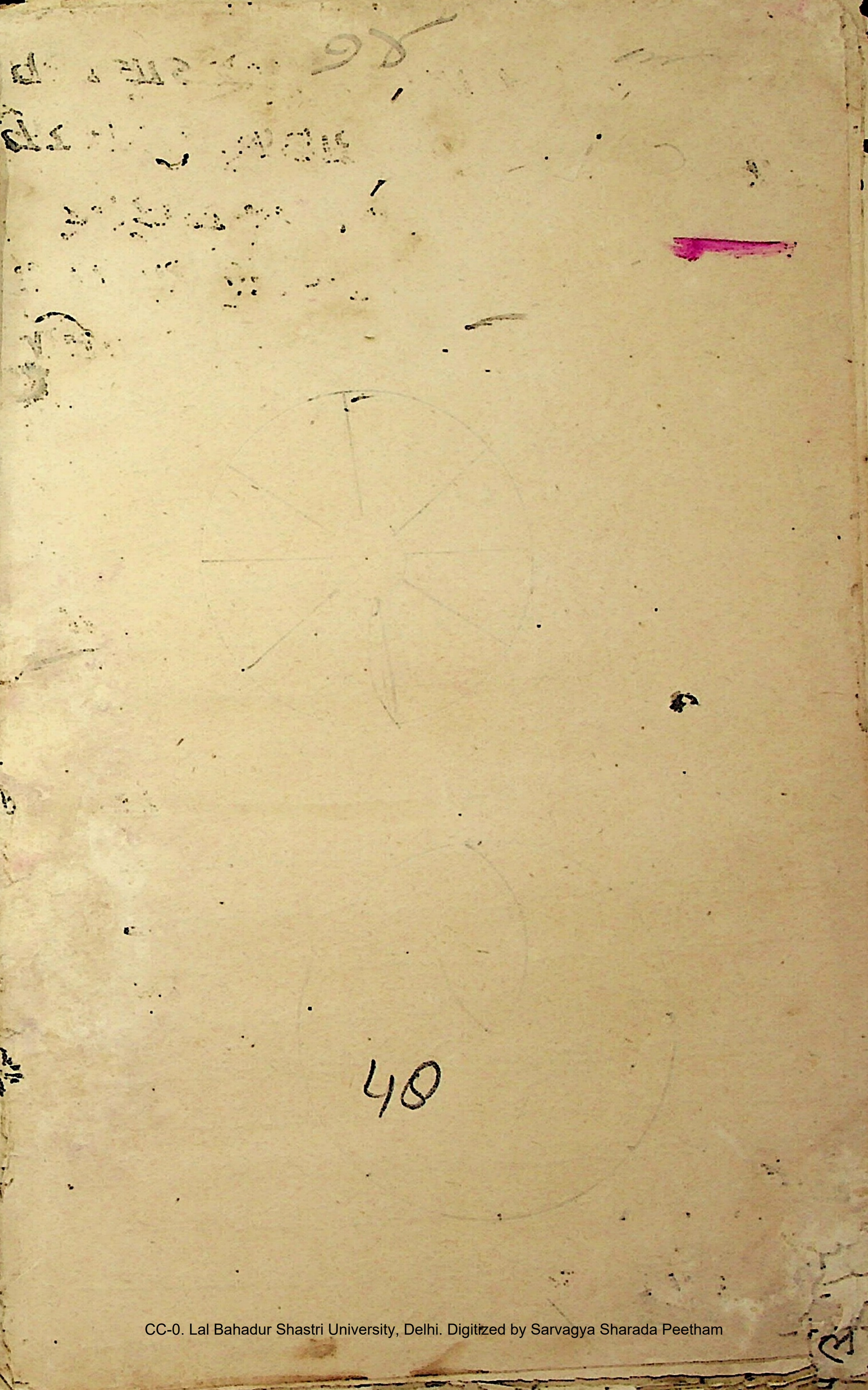
म पउपे पउमाते उ

उ:



श्रीमतेरामानुजायनमः

३२६


48

वर्षअंक उसी अंकपर सर्व्व को त्रिपताकी मा
गावे इसी प्रकार उस ४ के भाग का शेष अंक ज
-मगत ग्रह राशि मा जोड ना जुड कर जिस जिस
ग्रह राशि का जो जो अंक आवे उसी उसी अंक
संख्या पर त्रिपताकी मे ग्रह लगाने ये जन्मकुण्ड
-ली के ग्रह लगाये जाते है और जो चंद्रमा को ९
के भाग मे शेष १ बचे तो जन्मलग्न मा चंद्रमा
जिस राशि पर हो उसी राशि पर त्रिपताकी माल
गावे और जो सूर्यादि ग्रहों के स्थापनार्थ प्रवेश
वर्ष मे ४ के भाग से जो शेष १ बचा तो जन्मलग्न
मे जिस २ राशि पर ग्रह बैठे है उसी २ राशि पर
त्रिपताकी मे लगाना। और जो भाग बचे शेष
-अंक जन्मराशि स्थ अंक मे मिल कर १२ से जा
दे हो जावे तो १२ को अलग न कोल कर बचे
स्थ ग्रह को त्रिपताकी मा लगाना। जन्म राहु
केतु को ४ के भाग के शेष की तुल्य पीछे
हटा कर लगाना। जैसे प्रवेश वर्ष १५ इसको
४ का भाग दिया शेष ३ जन्मलग्न राहु क
न्या पर है तो ३ पीछे हटा कर मिथुन पर
त्रिपताकी मा लगा १

दिनमें इन्हमें भयाथ्थ राशियों के स्वामी

दिने चक्रं

१	२	३	४
सू	शु	श	शु
दि	दि	दि	दिने

रात्रौ

१	२	३	४
वृ	चं	बु	मं
रा·	रा·	रा·	रा

इति मुहुर्तलोमं रात्राविदं दिनपतेय: दिनामिदं राशे पतय:

रात्रौ

५	६	७	८
सू	शु	श	शु
रा·	रा·	रा	रा·

दिने

५	६	७	८
वृ	चं	बु	मं
दि·	दि·	दि·	दि·

और वृश्चिक पर्यंत के जानना राशि वाला

और धन मकर कुंभ मीन इन्ह चार राशि के स्वामी

श· कुज· वृ· चं

ध	म	कुं	मी
श	मं	वृ	चं

चाहे दिन का हो चाहे रात्री का हो इन्ह ४ राशीयों के येही स्वामी होते है

८७

अथ त्रिपताकी

त्रिपताकी चक्र में पहले वर्ष लग्न की राशि स्थापन कर के फिर क्रमानुसार सर्व राशि स्थापन करना गह लगाने की रीति यह पहले प्रवेश वर्ष के अंक को ९ का भाग देना शेष बचे उस शेष अंक को जन्मपत्र के जन्म लग्न मा चंद्र जिस राशि पर बैठा हो उस राशि अंक मा जोड देना जुड कर जो अंक आवै उसी अंक वाली राशि पर चंद्रमा लगा देना॥ फिर उसी प्रवेश वर्षांक को ४ का भाग देना जो शेष बचे उसी शेष अंक को जन्मकुंडली मे सूर्यादि ग्रहों की राशि मा जोडना जो जुड कर जा

७६

पलको पलों जोड़ने राष्यमें चढ़ाते गये तो ग्रह स्पष्ट होंगे॥ गणित रीती गोमूत्रिका सें ग्रह स्पष्ट करना

जैसे शेष्य	५	२२	५८ ८ और गति सू० ६०।५५
तो स्थापना	६०	६०	६० क्रम से ५८ साध्य हुवा
	५५	५५	५५ फिर ५५ को ५८ = साध्य
	३०	२५	३४ = यहां रखा प्रथम
	२१	६।५	३१ = द्वितीय यहां रखा

इसको ६० का भाग लब्ध [illegible] शेष घड़ी पूर्व भाग जो शेष पल होंगे इन्हें को सूर्य स्पष्ट में गति के अनुसार हीन युत करने से ग्रह स्पष्ट होंगे जिस राशि का ग्रह हो उस राशि जो पूर्व जानना आगे अंशादि [illegible] सर्व [illegible] जानना॥

ग्रह स्पष्ट से भाग होरा - द्रेष्काण - नवांश - द्वादशांश - त्रिंशांश - ग्रह कुंडली प्रथम स्थापन करना

फिर लघु पंचवर्गी जन्मपति १ वर्ष लग्न पति २ मुंथा राशि का पति ३ त्रिराशि पति ४ ये त्रिराशि पति अपने इष्ट घड़ी पल से देखना चाहिये के इष्ट दिन में है या रात्री में पहुंच गया देखे जिस दिन वर्ष प्रवेश हुवा उस दिन के दिनमान से देख लेना जो इष्ट वर्ष की घड़ी पल दिनमान की घड़ी पल से न्यून है तो ते फिर दिन में इष्ट रहा और जो वर्षेष्ट घड़ी पल दिनमान से बढ़ गया जादे है तो रात्री में इष्ट हो गया

जो ग्रह बक्री है तो गत मास जोड़ना शेष्य माध लेना चाहिये

(अथ प्रकार)

गतवर्ष के अंक में जन्म लग्न की राशि का अंक
मिलाकर १२ का भाग दे जो शेष बचे अंक वर्ष
उसी अंक पर वर्ष लग्न मा मुंथा लगाना ये मुंथा प्रकार
रहे॥ फिर ग्रह स्पष्ट चक्र लिखना उसमें ग्रह स्पष्ट स्था
पन करना ग्रह स्पष्ट प्रकार पहले गत ऐष्य निकाले
एकम से अष्टमी तक ऐष्य ऽष्टमी से अमावास्या
तक गत इसी तरह शुक्ल पक्ष मा जिस तिथि का इष्ट
हो और वो तिथि जिस मिश्रमान के समीप हो उसी के ग्रह
स्पष्टांक गत नक्षत्र लाहि तो ~~जोड़ना~~ घटाना ऐष्य मा
जोड़ना गत नक्षत्र लाने मे सवार मिश्रमान से सहि
तवार अपना इष्ट घटाने से गतान्त रहेगा और
अपने सवार इष्ट घडी पलों से मिश्रमान सवार
घटाने से ऐष्यान्तर होगा॥ फिर गत वा ऐष्य
को सूर्यादि ग्रहों की गति से गुणा गुणा को का मे
६० का भाग लब्ध पूर्व मे जोड़ना फिर पूर्व को
६० का भाग दे लब्ध पूर्व मे एवं प्रथम भाग ६० को जो
दिया उसका शेष जाने देना लब्ध को पूर्व मे मिलाना
फिर ६० का भाग लब्ध उपर मा जोड़ना उपर का
नीसरे के नीचे मा उसको ६० का भाग शेष पल
आइ लब्ध उपर मा जोड़ना लब्ध अंश शेष कला
पूर्व का जो शेष वो विकला अं. क. वि. जीस रा
शि का ग्रह हो उस राशि को पहले धरना पीछे
अंश कला विकला की घडियों को गत हो तो घ
टाकर मिश्रमान के ग्रह स्पष्टों मे से ऐष्य हो
तो जोड़ने से अंश ... के घडी के घडी मे

(?:स्पष्टवर्षकालनिर्णयः

ल्यक) गतासमस्यादि युता वर्षाधिप सम्याग

वेदस्पष्ट घटिका जन्मवर्षादि संयुता: स्पष्टवर्षप्रवे

प्रवेशे चतुर्दशोत इत्यादि सेवकालना प्रकार

वत को वर्तमान संवत में से घटाया तो गत वर्ष

गया फिर गत वर्ष को ८ ... से भाग देना लब्ध ३ जगे र

एक जगे ४ का भाग देना लब्ध गत वर्ष जो ३ जगे स्था

है पहले में मिलाना शेष दूसरे में जो गत वर्ष है उसे

लाना शेष के १५ मिलाने २ के ३० तीन के ४५ मिलाने

कर उन तीनों अंकों को २९ गुणा ... कर सा

का भाग देना लब्ध पूर्व में मिलाना शेष को वहां रह

फिर दूसरे को ६० का भाग देना लब्ध पूर्व में मिलाना

शेष वहीं रहने दे फिर तीसरे को ७ का भाग दे शेष

आवे जो लब्ध को जाने देना तो ३ अंक आवे पहले

सा दूसरे को घड़ी तीसरे को पल से ...

कर इन्ह वारादि घड़ी पलों में अपना जन्मवा

... के नीचे सूर्य्योदयादि इष्ट की घड़ी पल

घड़ी पलों के नीचे जोड़ना तो स्पष्ट वर्ष

... दिन कहेंगे ॥ फिर वर्षेष्ट घड़ी पल को सारणी

... नीचे राशि के सन्मुख ... घड़ी पल ... कर

... अंक जो ... आया है उस अंक की घड़ी पल देख

... कोठे में है उसी कोठे के सन्मुख का लग्न हो जावेगा

देखने की रीति है ॥ जब लग्न आगया तो लग्न कुण्डली

... जिस दिन का इष्ट है उसी दिन के मिश्रमान के ग्रह

... चंद्रमा उसी दिन ... देख कर लगा देना इस

... वर्ष वे ... स्पष्ट ... करके वा

लगाना ... गत ... का जे

धर्मेण हन्यते व्याधिः धर्मेण हन्यते ग्रहः

धर्मेण हन्यते शत्रुः यतो धर्मस्ततो जयः

पं:

प्र० काशी

प

प्र० वेंकटरमण सीटि पं:

कंपीके प्राध्यापक

ज्योतिष वाष्णिज्यो

तिषाध्यापक गोयन

केति के

संस्कृत

कालिज

स्व: पं० उ० गनिपत ...

ग्रह है और सम ... ग्रह

है। मेष मिथुन सिंह तुला

धन कुंभ ... ग्रह

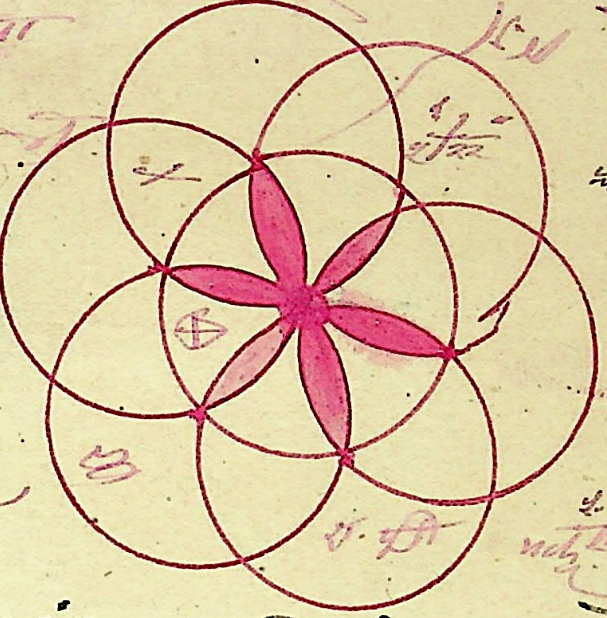
और स्त्री राशि है।

15

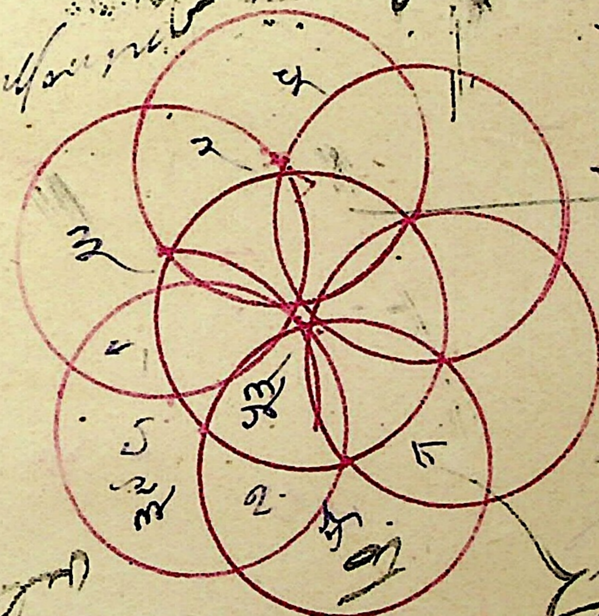
श्रीः

अत्रिपाम्सतापाम् दे वद तोभवति भवतीति मध

न्यवंतंतं दे वह तंपन्नुद तः भेरपति



अथ दो नक्षत्रं तत्र नाभिकां आद्य रेवती सा
दका एवं तरु नदी म्लेछ पर्वत पाड़ी सर्प
पास भयानक नाभिकां केन्या नो है
तु। यह वाक्य मतस्म तिका है॥ यह
काम लडकी के नही धरणे चाहिये॥



रुमंजामारीसेवंमंवमपद्रगं कालमतेप सेदं

वोगीकुंत्नानगम्यं जणविधिमजितंनीर्जुगं

तेर्जीकारंद पातीनंसुरंसं खलनधनी

ऐतेप्र लवदैपदेवंवेकुदृवदर

लंकेसुरैजन्स्र जा हर

सर्वज्ञाधिवितंसमनः कुलेनःसर्वधिद

सपुत्रवानगुणप्रसप्र वक्तामाचिद

धंनी वसर्वेग्राग: लोचेत

माफ़कंति

श्रीमतेरामानुजायनमः

मोहंध्वमार्विनानपफति

सततंदुर्वचनपिने

८४

श्रीरामकृष्णायनमः श्रीरामरामेति रामेति रमो
रामेमनोरमे सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम ॥१॥१॥

श्रीमतेरामानुजायनमः पापाचारमचंदे दलं रम
थनेसेतव चेमसुद् पापाचार... ...ग्मने
तत्मले ... मित्रे पापः आदंकर रसुत्रिपुर
पर दहनेरवा ... चाजेनस्य सापाचारसिहि रूपा
भवनत ... ५३

आरोस्ते तर ... ...ोमलतो भोमगता
योपेसमुत्तेवहि सार करा मजमुरास्तदा
सोरेराले सतक्ष राजरायपले तुशस्तं

सदवरसादेमु योकुभकसरकरा
तेमलताधा तासुजानोत्सर ५

॥१॥ ॥ श्रीमते

रामा
रामं कामारीसेव्यं भव भयहरणं योगीन्द्र
गुणनीये मजितंनीजे॥ योगीहं
ज्ञानगुणनी

८५

अवग्रस्त ता का द्वार करके संदिग्धा में है
यह वाक्य पत्र ४४" पर है "५" ६ "१" "२" "४"
जो यह लग्न हो तो पूर्व की तरफ द्वार करना
और २"६"१० में दक्षिण द्वार करना
मिथुन तुला कुम्भ लग्न में पश्चिम को का
द्वार करना कर्क मीन वृश्चिक में
उत्तर की तरफ द्वार करना यह वा
क्य ग्रहस्थिति लग्न प्रकाश में पत्र ८
वा ८" पर है" और जो जन्म लग्न में
सूर्य ग्रह केन्द्र में हो तो पूर्व
द्वार करना जो मंगल राहु के
न्द्र में हो तो दक्षिण करना शु
नि चन्द्र जो केन्द्र में हो तो पश्चिम
करना बुध गुरु केन्द्र में हो तो उ
त्तर की तरफ द्वार करना यह भी
प्रकार पत्र ८ " पर ही है"
लग्न का जो ग्रह पृष्ठोदय देख
ता हो तो उस ग्रह के अनुसार

करना है

सूर्य देखता हो तो लाल वस्त्र
खाई चन्द्रमा देखता हो तो सपे
द मंगल से लाल बुध वृहस्पती
से पीली शुक्र हो तो सपेद ॥
शनि राहु केतु से काली ॥ वस्त्र खा
ई है इस प्रकार प्रस्तिल
न प्रकाश मे पत्र २२ पर प
हा लिखा है जो बालक के ज
न्म लग्न मे सूर्य पीसी तह हो
तो मिष्ट पदार्थ मदारा की खाहै
चन्द्रमा लग्न मे हो तो खावे चौ
जखाई मंगल हो तो कडवी
बुध मासमिल हुवे ॥ बृहस्प
ती हो तो खटाई मीठी ६ई वस्त्र
खाई शुक्र हो तो खीर खा
द घ चिवा शनि हो तो कडे
मीठा खाया [illegible] खाई ॥

और मैने [illegible] ॥ २०५ [illegible]

वस्य स्पनस्या सिन्धोरस्याधस्या

चरेदयोजनापनेघपालिमे
खगेरवौर विज्यमाद्रुपो
गतश्रुभमान्हस्वचासन्दयु
स्मभीनथन्यकानुलाववे
विलग्नकेहिरागमलय
धूमेनोर्भेपमदूड्भिः

श्रीगणेशाय नमः॥ व्ययेशनिवे
वनिजस्थतौ भेमगजस्तनोचं दृष्व
लानस्पलानयेद्वकविश्लोक्यरि
बोमतौश्लोर्लसेद्भभागक्य
मरेचसर्वे॥१॥ किंकुर्वतिजन
स्तर्वेयस्यकेन्द्रेविरूस्थितिमंत
मातंगयूथानामवतंदतिचे
केपरी॥२॥ श्रीमते रामानुजा
यनमः॥१॥

श्रीः

गायत्री का आवाहन ॥ आगच्छ वरदे देवी त्र्यक्ष
रे ब्रह्मवादिनी गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने न
मोस्तु ते ॥१॥
गायत्री का भी न्यूसां ख्यायन है और पञ्च
अवर है ॥ अब गायत्री का विसर्जन लिखते
हैं ॥ उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतवासिनी ब्रह्मणा
समनुज्ञाता गच्छ देवी यथासुखम् ॥२॥ भगवती देवी
त्वमस्त्व स्वस्थाने गच्छ ॥ गायंतं त्रायते तिं गाय
त्री छन्दंसि येन गायेत्ति सा गायत्री ॥ श्रीः श्रीः श्री

कोठे पाठ्वावा मंजे पर हवा वा
धरती पर हुवा वालक कज
ना यह विचार पत्र जन्मस्तित
नम्र का पूर्ण म पत्र ४१ ॥ पर
है ॥

	८०		२०	
	८८	६	३	७
२	०	२	२	२

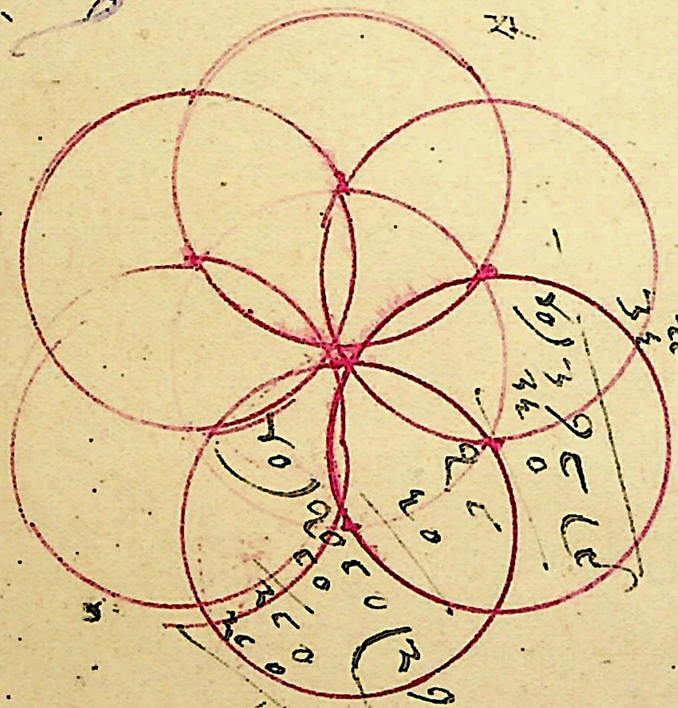
श्रीगणेशा यनम

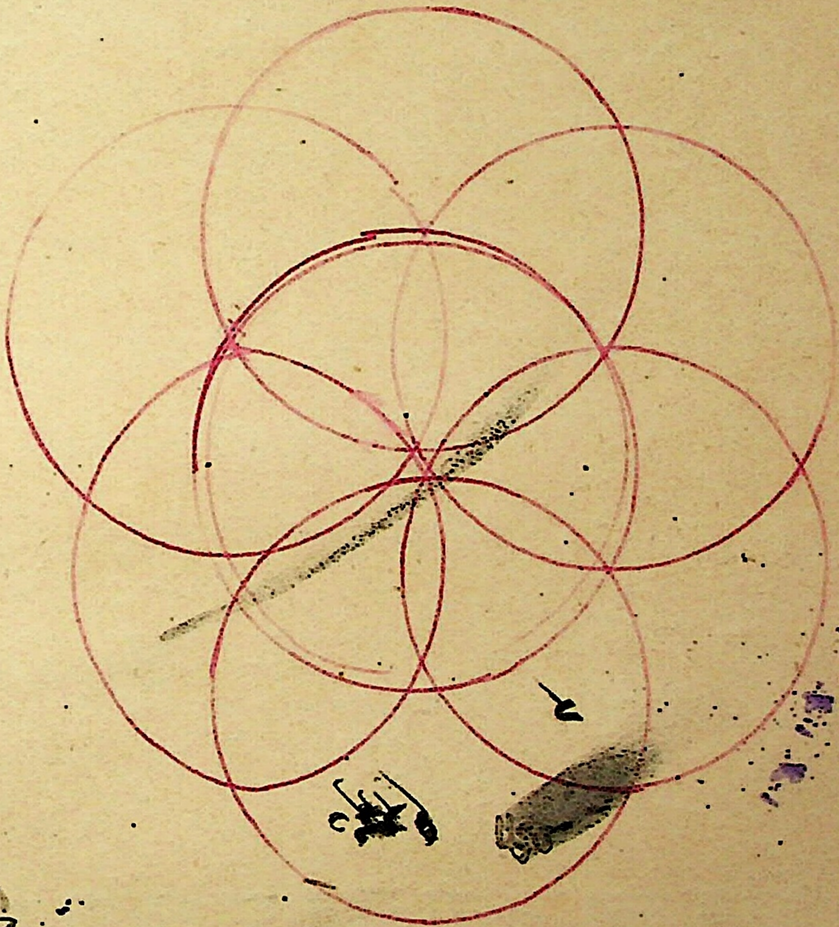
श्रीग

श्री

श्रीग

श्री गणेशायनम





[illegible]	[illegible]	0	[illegible]	0	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	0	[illegible]	0	[illegible]	0	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सुवर्णादिमानमुक्तं अगे धान्यमानकौ प्रसादपय अ४
पंचगुंजात्मको माषः ते षोडश कर्षः कर्षैः
कर्षैश्चतुर्भिश्च पलम् अन्यदपि
पलद्वयं प्रसृतं स्याद्द्विगुणं कुडवं
तच्चतुर्गुणं प्रस्थः तच्चतुर्गुणं आढ
कः तच्चतुर्गुणं द्रोणः ॥ पलं च कुडवं प्र
स्थ आढको द्रोण एव च धान्यमाने प्रबो
द्धव्याः क्रमशोऽमी चतुर्गुणाः ॥ धान्यमानं
द्रोणद्वयं कुंभः षोडश द्रोणा खारी इति
हृदयमाषको नि[illegible]ष्कः ॥ ४५ प्र
से का वी १ पल शास्त्र में लिखा है ॥

हिंदुस्तानि तोल गा ८ खसखस का
१ चावल ८ .. चावल की १ रत्ति
८ रत्ति का १ मासा १२ मासे का
१ तोला ५ तोले की १ छटांक
१६ छटांक का १ सेर ५ सेर की १

अकर्मकत्वं नामवि फलसमानाधिकरण
व्यापारवाचकत्वं अकर्मकत्वम् ॥ फल-
व्यधिकरणव्यापारवाचकत्वम् सकर्म-
कत्वम् अकर्मकोऽपि धातुः उपसर्ग
वशात् सकर्मको भवति यथा दुःखमनु
भवते [illegible] तु द्वि प्रत्ययानां
[illegible] कर्मणि कारणं [illegible]
कर्मणो ॥ १ ॥ तत्र यत्प्रीतं [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
पः [illegible] [illegible] इति
[illegible] सकर्मक
हो [illegible] है ॥ [illegible] भा
[illegible] अकर्मक भी
इस [illegible] सकर्मक हो गई ॥
[illegible] हो गया ॥

चंद्रमा के स्पष्ट में ... पह ...

नकरना फिर घडीपल तीन अंक होंगे

उदाहरण जैसे आश्विन शुक्ल १३ का चंद्र स्पष्ट करना है उसदिन इष्ट २४।३७ है और इसदिनकी तिथि १३ घडी ५८।२७ है तो इष्ट से तिथी घट्यादि अधिक होनेसे पूर्वतिथि १२ को ६० से हीन करके अपना इष्ट घट्यादि मिला देना तो घटि पल ~~होजा~~ जो अंक के आदिमा तिथि जिसतिथिका इष्ट हो वो स्थापन करना गततिथि जित्नी हो शुक्लपक्ष की प्रतिपदा सो गीन कर अपने इष्ट दिन तिथि पर्य्यंत स्थापन करना जैसे यहां १३ तिथि का स्पष्ट करना है चंद्रमा तो इष्ट २४।३७ से तिथि अधिक होने से पूर्व द्वादशी की घटी पल को ६० से घटा इष्ट जोड ~~६०...~~ द्वादशी तिथि शुक्ल प्रतिपदा से गततिथि १२ के आगे इष्ट जुडे हुवे घडी पल रखदेना १२। मतलब ये है के शुक्ल प्रतिपदा से गीन कर अपने इष्ट तक गततिथि स्थापन करना

जो यहां आजां ५ सा ५ हे ... के हे जावे तो ६० का भाग ...

घटी में जोडना घटी ६०

से अधिक हो तो ६० का भाग दे लब्ध वर्षों में मिला नाजो अंक ३० से ... हो तो ३० ...
... आदि ना ... १२ से अधिक ...

इति जिस दिन का इष्ट है
उस दिन कि तिथि जो देखना है सो जो ते
ने घडि कितने पल है तिथि घटि
पल को स्थापन करना अपने इष्ट को घ
टि पल को स्थापन कर देखना है तिथि
कि घटि पल जादे हैं या इष्ट कि घटि पल
जादे है जो इष्ट कि घटि पल जादे है तो
तो तिथि घटि पल को इष्ट से घटादेना
जो तिथि कि घटि पल जादे है इष्ट
कम होतो पूर्व तिथि की घटि पल को
साठ से घटाय इष्ट जोड देना फिर
तीन अंक होगे जो इष्ट अधिक होतो
तो वर्त्तमान तिथि होनको हुतो तावत
मान तिथि का अंक और घटि पल
तीन अंक होगे उदाहरण जैसे सं.
१९२० का० शु० १५ बुधवार घटि
२६।१-४२ है उसी दिन इष्ट ५८।१५ है
तो इष्ट अधिक होने से इष्ट लिया है

...५८।१५ पल से तिथि कि घटि १।४३
हो न किया तो ४१।३२ पल सेष रहा तिथि १५
४१।३२ इन तीनों अंको को जुदा जुदा १२ कि
साथ गुणा कर गुणाक अंक को ६० का भाग
दे लब्ध घटि मे जोडना सेष को पलो की
जगे रखना फिर घटि को साठ का भा
ग दे लब्ध अंको मे जोडना अंको को
३० भाग दे लब्ध राशि सेष का अंशा कला
विकला होगी अब इन राशि अंक कले को
सूर्य स्पष्ट मे जोडने से सूर्य सिद्धान्त
के अनुसार चंद्र स्पष्ट होगा और जो दूष
१६।५२।५० है और १५।३ सो दिन परा १३।५०
है तो तिथि अधिक होने से पूर्व तिथि १४
को घटि पल को ६० से घटाय ६४ जोड देने
से तिथ्यात मान घटि पल होगा जैसे ति.
१४ घ. १३।प. ५०।६० से हीन किया तो ४६
प. ८ ने सेष रहा ६४।१६।५२ मीलाया तो ६५ वे
६२।६० तो चतुर्दशी १४ घ ६२।६० गया
तो अनुसार किया तो ६५ वे २५।३।१०० इनको
...से गुण पूर्वोक्त रीति से चंद्र स्पष्ट होगा

इस प्रकार सर्व जन्मपत्रियों में तथा
सर्व फलों में सर्वत्र इस रीती से
चंद्रस्पष्ट कर लेना ॥ जो चंद्र
मादि गति चंद्रस्पष्ट को के प्र
धको छमे लिखने के वास्ते ५९
गति निकालने की रीती ये है
प्रथम भयात् व भोग निकाल
लेना फेर भभोग को पलात्म
क कर लेना फेर २८८००००
इस अंक को पलात्मक भभोग
का भाग देने से लब्ध घटी पे
पे पल चंद्र गति होगी स्वच्छ
[illegible] वेद पभोग [illegible]
इस श्लोक से चंद्रगति पूर्व
के रीति से जाननी
कर फेर भभोग का भाग दे लो

वारगवर्ति प्रकार सदैव काल कापी कुसदे
त्र के पूर्व रेखा ६३ योजन कि है यानि भाग
र्धपे है के कापी कुसदे त्र कांची ६३
योजन का है इसको॥ यादेन रेखा पर प्रवे
योजनैः पलै प्रतीनास्ति यथोदिनार्द्ध तः
ऊनाधि कास्त द्विगते द्रुवैः पलैरूर्ध्वंत
याधोदिनवप्रवेशनम्॥ इसके अनुसार
कापी कुसदे त्र मध्य रेखा पूर्ववर्ति
६३ योजन है इसका पादून किया तो ४७।१५
हुवे ४७।१५ को स्ति यतः ऊना कार्या तो पि
१५ से ४७ को घटाया तो हुवे १५ के कि य
१४।१ ए कलिया उसके बनाये ६० घर
पे ४७ रहे १३ तो विवर १४।१३ हुवा
इस १४।१३ को दिनार्द्ध मे से सदैव का
घटा दे ने से वार प्रवर्ति से गी ओ दि

नाड़ी मे से १४।१६ नहि घटे तो १४।१६

को ६० से घटाव दिनाड़ी घटिपल जोड़दे

ने हे वार प्रवृत्ति होगी पे वार प्रवृत्ति आम

है ॥ अब वार प्रवृत्ति जे तत्काल काल से सर्व 60

गहैं की होरा का काल निश्चय प्रकार लि

खते हैं अहोरात्र मे २४ होरा होते हैं अहो

रात्र घटि ६० मे २।३० घटि का १ होरा २४

का ६० होते हैं जिस दिन मे वार प्रवृत्ति

है उसी वार प्रथम होरा है अमानुक्रम से

ज्ञेया कि होरा जाननी ॥ अब दूसरा प्रका

र लिखते हैं ॥ जितने घटिपल के ऊपर

वार प्रवृत्ति हो उसी घटिपल को दो गुणा

करे दो जगे रखे १ जगे ५ का भाग दे जो

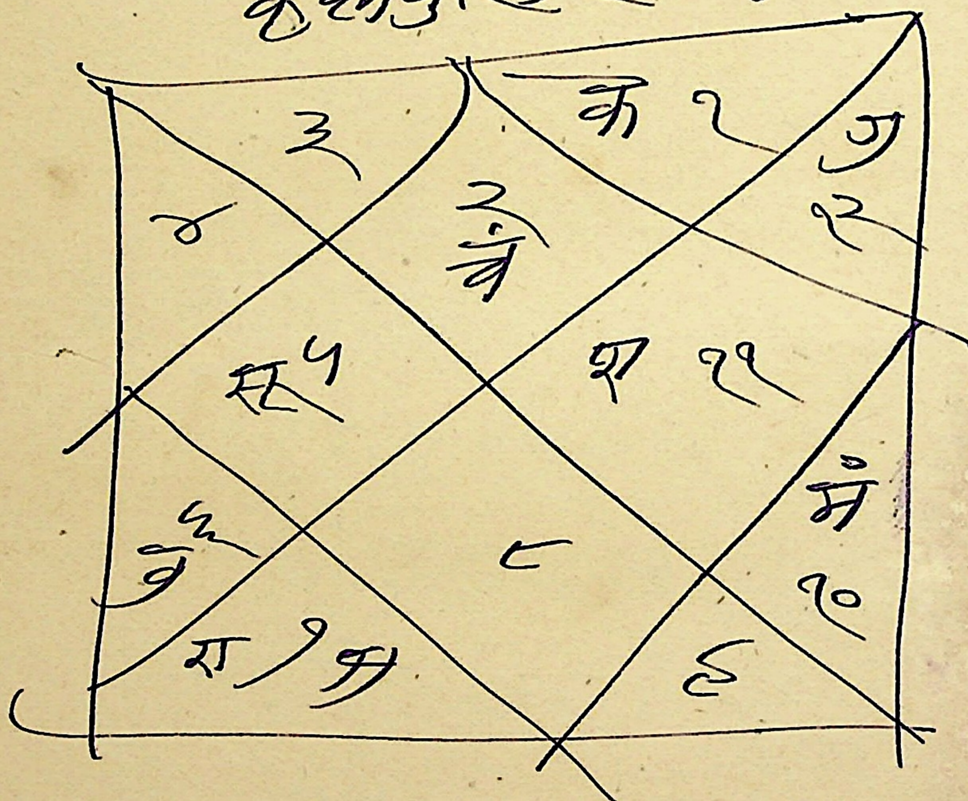
लब्ध हो उसको जाने दे शेष बचे ७ शेष

को दुगुणा करे जो दुगुण नाडिका १२ शेष

(अर्थात् रवाल घटि से ...

घटादे जो शेष ७ अंक घटा कर बचा वा कि
उसमे १७ और मिला ४७ का भाग देने से ७ प्रव
शेष काल होरा जाननी दिन महाकाल होरा का प्रमा
ण और वार प्रवृत्ति का प्रमाण मुहूर्त चिन्तामणि
का प्रमाण है ॥

कुण्डलीयम्



उदु... ...मीपारे ...रि

कृ तिपि संख्यकानमेजीमीद्वि

लाहत्रेमघपांरिमनीरवि:

ग्रनानिकातथ्यासेवा

पचानद कत तईस:

कनिष्टकाप्रमाणेन

सचेयक्ष नयोदेश:

भाषा खोरंतग क्ष कोप

कडतो॥१॥१०॥१५॥ इत

ना दिन चरकन न

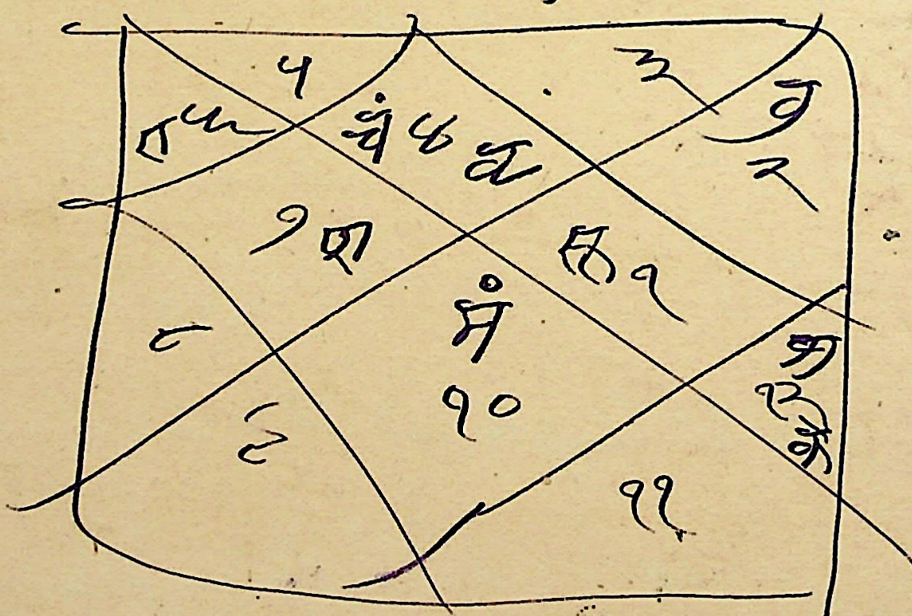
१७
तजेनीसे॥२॥६॥११॥

कहना नक्षपाम सेइ।१।१२

कहते ग्रनानिका।सोधा।ईाृ१४

२०८
कहते कनिष्टकासो।४।८।१२।ृ

जन्मपत्रमें लिखने का श्लोक ॥ येनो
त्पाट्य समूल मन्दर गिरिं श्री कूर्म
तो गो कुले राहु येन महावलि:
स्वररिपु का पांडु प्रोषी कृत: केवा
त्रीणि पदानि येन वसुधा
वृद्धो वलि लीलया सर्वा पातु युगे
युगे युग पति स्त्रैलोक्यनाथो हरि:
१॥ यावन्मेरु धरा पीठे यावच्चन्द्र
दिवाकरो तावन्नन्दतु वालो
यं यस्ये या जन्म पत्रिका २॥
श्रीरामलग्नम्



[illegible]

२०४

राशिः वर्गस्वामिः अए वर्ण नाडी
योनिः एतद्विवादि प्रचिंतनीय
म् पहले लिखने जन्म लग्न मे

फेर यह श्लोक लिखना ॥ ध
र्मेण हन्यते व्याधिः धर्मेण ह
न्यते ग्रहः धर्मेण हन्यते श
त्रु यतो धर्मस्ततो जयः ॥१॥

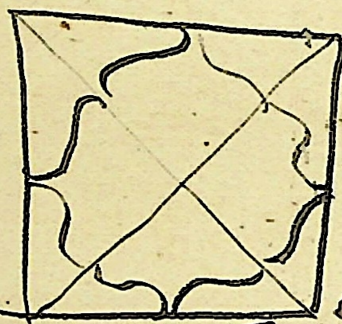
१।२।४।६।८।१२ ए षष्ठवेधक
... मु प्रमाणं छ तदानेमु ॥
... णि मा ग तं वे काप्पि मु ॥ म
... त्र प मंत्रस्य ~~...~~
जाप्पं ३॥ सह स्त्र मु का प्पि मु
शता ब्रह्म पात है ईश्वर प्र
सादात् छोम ब्रह्म पात

दिनमानस्य घट्य: रात्रिमानस्य घट्य: ॥ उभयोरैक्यं मुहूर्त्तं

भौमभञ्जोदानीयो

प्रतिपो
तिमा
गतम्
क्षण
पात्र
दानश्च
कामन्तु

जन्मकुण्डलीयन्त्र



ग्रहालवे
दानावि दे
वदन्ति
परप्रधानम्

प्रथाऽस्मिन्शुभसम्वत्सरे श्री
पतीवीरविक्रमादित्यराज्ये सम्वत्
[illegible]

त्रिपताकी चक्रम्॥ 'तद्य [illegible]

पञ्चवर्गी चक्रम

एवम्पञ्चाङ्गशुभावत्र
दिनमानम् ॥३२।२३॥

२०५ सकलकलपरगमाली श्रीः विजयते पदीयेपंपत्रि
का॥

श्रीगणेशायनमः॥ पद्मस्तेतिमङ्गलम्या चम्द्र १

आदित्यादिग्रहाःसर्वे सनक्षत्राःसराशयः
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु पःकल्याणं तेषां जन्मपत्रिका २
जननी जन्मसौख्यानां वर्द्धनी कुलसम्पदाम्
पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते जन्मपत्रिका ३
श्रीःसौकु[illegible]पमेपकान्तिर्येभनाकूलकहै
दर्पमन्मथसकर्ता नवगोपवधू विलासाख्या
ज्ञलीनवमाली वितनोतु मङ्गलानि ॥ 63

ॐ गण्डस्थलीगलितमन्दमदप्रवाह
माद्यद्द्विरेफमधुरस्वरदत्तकर्णः।
हर्षादिवालसनिमीलितनेत्रयुग्मो
विघ्नच्छिदे भवतु भूतपतेः
र्गणेशः॥१॥

श्री ॐ

अद्य शुभ सम्वत्सरे ऽस्मिन् श्री नृपति वीर

श्री विक्रमादित्य राज्यात सम्वत १९

शाके शालिवाहन [illegible] स १८

मासोत्तमे मासे माघ मासे कृष्ण पक्षे

शुभ तिथौ [illegible] वासरे घट्यः

पलानि [illegible] नक्षत्रे घ. प. || योगे घ. प.

ववकरणे घ. प. तत्र दिनमान घ. प. || रात्रिमा

न || घ. प. || सूर्योदय [illegible] १००

[illegible] प्रांड्. [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] घ. प. १९

[illegible]

तज्जन्मनाम भद्रगलि रीर नक्षत्रस्य
प्रथमांघ्रि जत्वात् (द) जन्मनाम
बालकरामेति बोध्यम् तस्यराशी:
वृषः वर्णोम पक: गणो देव: वश्यो
वैश्य: योनिर्भुजग: नाडी डोऽन्त्या
स्वामि: शुक्र: विवाहादिषु चैत
नीयम् भुयत्वात् 64 [illegible]

"जन्मलग्नम्॥"

चं ५ बु. — सू. ४ शु. — ३ — श्रा २ — ६ के — ७ — १ — मं ८ रा — ९ — १० चं — ११ — १२ — ३

"चन्द्रलग्नम्॥"

३ — ४ सू. शु. — २ रा. — १ — ५ चं बु. — १२ — ११ — ६ के — ८ चं — ७ — १०

श्रीमते रामानुजाय नमः

संज्ञा है " नवम घर " द्वादश घर और ... के

छ घर और ३ तिसरा घर ... खेती ... है

की आपो ... कि ...

म संज्ञा है

सं २९ २६ आश्विन कृष्ण २ बुध वासरे

इष्टं ५५।।३२ सूर्य: ४।।२९ न गं ४

सिंह: ... स्थानाद्य परास्य ...

१ मेष
२ वृष
४ कर्क
९ धन
१० मकर
यह पृथ्वी
राशि है

॥ जन्मांगम् ॥

६	सू. ५ बु. मं. भृ. ब्र.	४ के.
७		३ बु.
८	११	२
९ रा.		१२ चं.

५ सिंह धन
१ तुला
८ वृश्चिक कुंभ
यह श्री वायु
संज्ञा है ॥

भाद्र. अ. ५ रवि. इ. ४ ... आसिन ... ॥ ५८

चंद्रमा ब
धन ...
नि यह स्त्री
गा है ॥

४	३ ब्र. २	१ रा. १२
सू. ५ बु.		११
६ बु.	के. ८	१० मं.
७ चं.		९

सूर्य
मंगल
गुरु

... ५ कृष्ण ... ३ ...

जन्मपे व पाताले पासित्रे ग्रष्टमेकुजे के चापर्तु वि नाशाय भर्तकं न्यावि नाशयेत् १
यह मंगलिक योग देखने का श्लोक है "
अथ मंगलिक योग परिहार :" वृहज्ज्योतिषसारे लिखितम् " यामित्रे च यदा सौरिः लग्ने च हिबुके तथा नवमे द्वादशे वापि कुजदोषो न विद्यते "२"

तन १	लग्न चद सकेन्द्र:
धन २	लग्न कर के लग्न व
सहज भ्राता	कर क चतुर्थ द कर क
सुख ४	दशमघर स कर क
सुत ५	सप्तमघर यह केन्द्र "
रिपु ६	स्थान है और इनकी केन्द्र की संज्ञा है "
जाया ७	पंचम नवम यह त्रिकोण स्थान है
मृत्यु ८	६ । ८ । १२ यह घर त्रिक संज्ञा वाले है "
धर्म ९	
कर्म १०	जातक मैत्र " रविन्दु भौम गुरवः " तेभ्यः कशानिराहवः
आय ११	स्वामीन्दु च त्वारि मित्राणि
व्यय १२	परा सीर रा...

65

...गेय यह है " रवि के ...

मवतिमवंतिः मवी मवी स्यव.या.म व प्रमवाम

मवाम व प्रव व य प्र त व प्र वी व व प्रवी प्र वप्र व

व प्रव व प्र व व प्र वी मे मति तमवी ततौ मवी

तार मवीमा सि मवीता स्य मवीता स्या मः

ता सी मवी मी स्व मवी मा सा मवी ता ति

मवी स्यातिमवी स्य तमवी स्य त मवी स्या ति मवी स्य ति मवी

मवत्रु मव ता त्रु मव ता मि मवं त्रु मव म मवता

मवतं मवत मवा ति मवी व मवा ग प्र मवत प्र व

प्र मवत प्र मवा प्रवा त प्रवा व प्रवा व

मवे. मव ग व प्र मवे

भू या त भ्र या सां भू व सु म भू सं मया

प्र म प्र म ता प्र व प्र प्र म

प्र स्य व प्र मवे स्व प्र व स्य

प्र वी.स तं प्र वे स्व प्र मवे स्य व

प्र त स त ग म ने स त त मा

वी.म व सा स्यं त स सा न जा

प्र त तो प्र ते त प्र त त प्र

तो हि प्र प्र त ती या प्र प्र ता मि

प्र ता व प्र मे प्रा ते

श्रीमते रामानुजाय नमः प्रत्ति प्रत
प्रतात प्रतास प्रत प्रः प्रत प्र प्रत
प्रताव प्रताव प्रत प्रात प्राव
प्रतीत प्रतीता प्रतीता प्रतीत
सि प्रतीता प्रतीता प्र
प्रति श्रीमते

शुक्र मंगल और गुरु यह मित्र है

चन्द्र बुध के शुक्र शनि राहु यह मि- 66
त्र है ।।

सूर्य का बुध सम है
शुक्र शनि शत्रु है

चंद्रमा के ~~…~~ मंगल ~~…~~ शुक्र शनि सम है
बुध शत्रु है

मंगल के शुक्र शनि सम बुध शत्रु है

बुध के मंगल गुरु ~~…~~ सम चंद्रमा शत्रु है

गुरु का शनि सम है शुक्र बुध शत्रु है

शुक्र का मंगल गुरु सम है सूर्य चंद्र-
मा शत्रु है ।। शनि का गुरु सम ।। सूर्य चंद्रमा
मंगल शत्रु है । यह नैसर्गिक मैत्री है ।।

सूर्य मेष का उच्च का और तुल का नीच का
चंद्रमा वृष का उच्च का और वृश्चिक का नीच का
मंगल मकर का उच्च का ४ कर्क का नीच का
बुध कन्या का उच्च मीन का नीच
गुरु कर्क का उच्च और मकर के नीच के है
शुक्र मीन के उच्च के कन्या के नीच के
शनि तुल के उच्च के मेष के नीच के

अब जातक दृष्टि का श्लोक लिखते है

पादेक दृष्टि दश मेत्त्रतीये द्विपाद दृष्टि नवपंचमे वा त्रिपाद दृष्टि चतुरष्ट के च सम्पूर्ण दृष्टि सम सप्तके च १ त्रतीये दशमे मंदः नवमे पंचमे गुरु चतुर्थे चाष्टमे भौमः शेषाः पश्यंति सप्तमं १ अब जातक दृष्टि है

ऽभवताजिक दृष्टि लिखते
है ॥ दृष्टिः स्थाने व. पंचमे वत्त
वृत्ती प्रत्यचातः स्नेहदा पादे नागवि
त्त कार्य्यसाधन करी मेलाप का
रको च्यते ॐ प्रस्नेह करी त्यतीय
भवें मे कार्य्यस्य संसिद्धिदा त्र्यंशो
नाकथितात्यतीय भवने पक्षा
ऽर्द्ध दृष्टि भवे ॥१॥ दृष्टिः पादही
ना चतुर्थ दशमे ऽप्रारि भावना
सता ऽन्योन्यं सप्तमे भेतथै
क भवने प्रत्यचौवैरारविता दृष्टं
हुक त्ती पंच्युत कयमि द कार्य्यस्य
विध्वंस दं संग्रामादि कात्ति प्र द
दर्शाइना स्य दुर्दशा प्रत्ते रे ॥३॥ ऽप्रर्थ
नह ऽभवने स्थान से
नवम स्थान को ऽ और पंचम स्थान को देखता है
वो ह दृष्टि व त्तवार्त्ती ऽ और प्रत्यक्ष हितकारक
कार्य्यसिद्ध कारक है ॥ ऽ और तीसरे ग्यार
ऽप्रकृत कर कार्य्यसाधक होती है ॥ चतु

र्थ दशम पादह ष्टि उपेक्षा भाव करते
है॥ आपस मे सप्तम हष्टि एकभव
नहष्टि प्रत्यक्ष वैर करवा
नी होति है ३ क्योंकी चतहष्टि
सँज्ञावी होति है कार्य के नाश क
रणे वाली होति है॥

अथ ताजिक मित्र सम शत्रु
चक्र को लिखते है॥ मित्र
तृतीय पंचम नवमेका
दश गतोपि वीर्य स्थाने रिपु
र्मतिरिष्फ छठे सामोज्यह: स्या
दिति ज्ञेयं शत्रुसप्तेक तूर्यजा
या स्थाने त पादशमे ताजिकरी
त्या जन्मते नेताह वाकपित्रम
स्मा मि:॥ अर्थ: जिस ग्रहसे जो

८५

६०

६ । ३ । ४ । ८ । ११ हो वो गृह है उस का मित्र होता है ॥ जो २ । ६ । ८ । १२ । हो वो सम होता है ॥ जो १ । ५ । ९ । १० हो वो शत्रु होता है ॥ ताजिक है लाजमत करके हमने लिखा है ॥

यो यो भावः स्वामि दृष्टो युतो वा सौम्यै र्वा स्यात्तस्य तस्यास्तु वृद्धिः पापैरेवं तस्य तस्यास्तु हानिः निर्दिष्ट । यो तस्य तस्यास्तु हानिः निर्दिष्टा ज्ञेया

च्छ तो लग्नतो वा ॥२॥

ये श्लोक लग्न में जात कुण्डली देखने का है ॥ पञ्चम भाव न ज्यो री पुरं ध्रस्ये सात दर्भा वना

यो कथ यन्ति तज्ज्या ॥२॥

ये श्लोक की जन्म लग्न में वर्ष लग्न में प्रथम जन्म देखने का है ॥ तस्य है तस्य

[illegible] वार क[illegible] पाद [illegible]

१।६।११ ... २ ५

जन्मरसे रुद्र. सूव रसि [illegible] आदि पञ्चे नेंदु
रजतं शुभ मृच्चत्रिसप्तदशताम्रं चतु
रा [illegible] ष्ट द्वादशे लोहमशुभं ॥१॥ जीसकी र
शि से शनि जन्म का हो अथवा बड़ स्थान हो
अथवा एकादशा स्थान हो तो सूवर्ण के पावे श
नि जाणना ॥ और जो २। पांचवें नवमे स्थान श
नि हो तो चांदी के पावे जाणना शुभ है ॥ और
जो ३।७।१० शनि हो तो तांबे का पावा जाणना
शुभ फल देणे वाला है ॥ और जो ४।८।१२
शनि जिस की राशि से हो वे तो अशुभ
फल के देणे वाला है ॥ जन्म के शनि को
और २। और १२ को साढ सतीबी कहते है
जिसकी राशि को शनि जन्म का हो वा
हो वा १२ वा दूसरा स्थान हो तो साढ सती कहते रा
शनि एक राशि पर २॥ वर्ष रहता है ॥
केतु १८ महिने एक राशी पर रहते है ॥ शु
क्र॥ चंद्रमा २। दिन ॥ मंगल ४५ दिन ॥ सूर्य ३०
दिन ॥ बृहस्पति १३ महिने रहता है ॥ बुध २१
दिन ॥ इस प्रकार [illegible] ने जन्म राशि से [illegible] २१

११८

म. चिं. मध्यो पीयूषधारायां नाडी
दोषः ॥ प्राच्ये कनाडीकुरुते वियो
गं मध्यया रव्य नाड्या प्रभयो विना
शः अन्त्या च वेध्य ब्य मतीव दुः
खं तस्मा च्चतिस्त्रः परिवर्जनीयाः
त्रि नाडी सर्वदेशे वर्जनीया
एक नाडी विवाहश्च गुरौ सर्वैः
समान्वितः वर्जनीयः प्रयत्नेन
दंपत्यो र्निधनं यतः नाडीवेधे
चरणवेधः [illegible] प्रावश्यक
विषय परित्याज्यः ॥ नाडीदोषा
पन्तये नाड्या मृत्युंजय जपादि
कं विधाय ब्राह्मणान् भोजयेत् ततः
वन्दिना गावो ऽन्नं वसनं
हेम सर्वदोषापहारकम् ॥

सूर्यकेवर्ष ६

चंद्रमाकेवर्ष १०

मंगलकेवर्ष ७

बुधकेवर्ष १७

ब्रसकेवर्ष १६

शुक्रकेवर्ष २०

शनिकेवर्ष १९

राहुकेवर्ष १८

केतुकेवर्ष ७

यह जातक दशा है
विंशोतरी इसके तीसरा
हिस्सा करने से वर्ष की
दशा निकल आवेगी ॥
उदाहरण छद्दतीया १८
सूर्य की दशा छ: दिन मास ०सां १८ दिन

म॰ पि॰ भ्रा॰ मा॰ म॰ उ॰ सि॰ ग्रं॰
१. २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ .

सूर्य मंगल स्थानि सद्रु. ये द्धा क्रूर होति हैं,
और शुभ हों निष्फल होति हैं

यो

३।०।२८।६

प्रथमाः ॥ इष्ट लग्नं स्द्रु द्रष्टमीतं प्रजः कृतिरं
धं स शुभ मं तो भांक त्रिभिः स्या ष्ट
शून्य षोडशेन्त जन्म पत्रि इंदु द्विशे
षे जीवा त: इति ज्ञेयम् ॥ यह श्लो
क मृत हुये की वा जीवित पुरुष
की यह जन्म पत्रिका है यह क
हदे नो इस विचार करने का यह
वाक्य है ॥ अब द्वादश भावों
का ज्ञान लिखते है ॥ तनु धन द्वितीय
की कृ सुखाः सुही नं त्वकारयेत
स शुभ श्च हरे ज्ञांजं शुभांके फल
मादिशेत ॥१॥ चन्द्र वेदे च द्वादशे
शुभि दानौ नेत्रे वाणे यो: ३ रोगैः रसे
सप्तमं श्रोतं शून्ये शान्यं प्रकीर्तितम् ॥

70

श्री:

ॐनाति ॐनीत ॐनेति ॐनासि ॐनीथ ॐनीप
ॐनानि ॐनीग ॐनीम ॐनीते ॐनाते ॐनते
ॐनीसे ॐनाथे ॐनीध्वे ॐने ॐनीवहे ॐनीमहे
नीता पारिस्यति पारिस्यते ॐनन्तु ॐनतां
नीताम् ॐनीत ॐनाद ॐनीतात ॐनीतम्
नीत ॐनानि ॐनाव ॐनाम ॐनीताम् ॐनी
नाताम् ॐनताम् ॐनील ॐनाथाम् ॐनीध्वं
ॐनै ॐनावहै ॐनामहै ६ ६६६६६६

अॐनात ॰अॐनातां ॰अॐनान ॰अॐना
॰अॐनातम ॰अॐनात ॰अॐनां ॰अॐनाव
॰अॐनाम ॐनीयात ॐनी या स्या। ६६६६

ॐनीयात ॐनीयास्तां ॐनीयासु ॐनीया ॐनीया
स्तं ॐनीयास्त ॐनीयासं ॐनीयाव ॐनीयास्म
ॐनीत ॐनीयास्तां

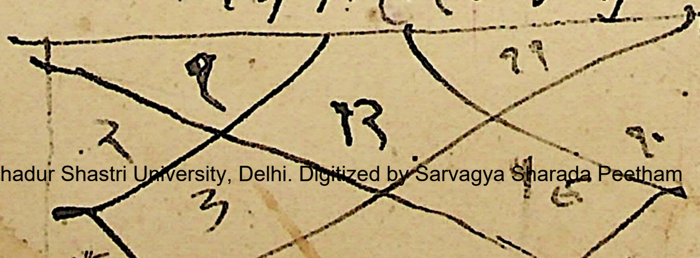
अथ वर्षेप्रा देखने कि रीती जो ग्रह पांच
घर मे बैठा हुवा लग्न को पां[illegible]
[illegible] पूर्ण दृष्टि देखता है वो बर्षे प्रा हो
ता है जो ग्रह ९ बैठा हुवा लग्न को प
पूर्ण दृष्टि देखता है वो वर्षे प्रा होता है
जो २।४। ग्रह ९ पांच। [illegible] नवम
पञ्चम घर मे बैठे हुवे लग्न को नव
पंचम के बलवाले पूर्ण दृष्टि लग्न
को देखते हैं [illegible] तब कौन सा वर्षे
प्रा होना चाहिये अब उन्ह दो चार
ग्रहों मे जो ग्रह पंच वर्गी मे बल
वा होगा वो हि वर्षे प्रा होगा जो ग्रह
बे का होगा अपनी राशि का हो
अपने मित्र कि राशि पर होगा
अपने द्रेष्काण का होगा अपने नवां
श का होगा वो ही वर्षे प्रा होगा

अथ तु इवपत्रबा २३. ५

आदि पातिय
नः पह लिखे

देवपत्रिका लिखने की रीति॥

श्रीगणेशाय नमः प्रथम वे पत्र पर सारा
श्लोक लिखना फेर प्रथम सम्वत्
जो संवत हो उसका नाम लिखना उ
दाहरण सम्वत् १९७० शाके १८३५ मा
स लिखना प्रथम मासे वैशाख मासे प्रथम
पक्षे कृष्ण पक्ष प्रथम तिथौ
प्रथम के वासरे कलादि: ३४।५५ प्रथम के न
क्षत्रे क. ५४।३० प्रथम योगे क. २-१२२॥
प्रथम करणे घ. ३.१३२ एके मु ६० न
त्र मेषार्क गतांश: ५॥ तत्र सूर्यो
क. ०५५।३० प्रथम लग्न जो हो मे
जन्म श्री माधुर जी वर के
जो नाम वर का हो सो लि
श्री माधुर जी वर मङ्गल रूप स
जाह रण भम महा पातक श्री र स
विवाह लग्नम्

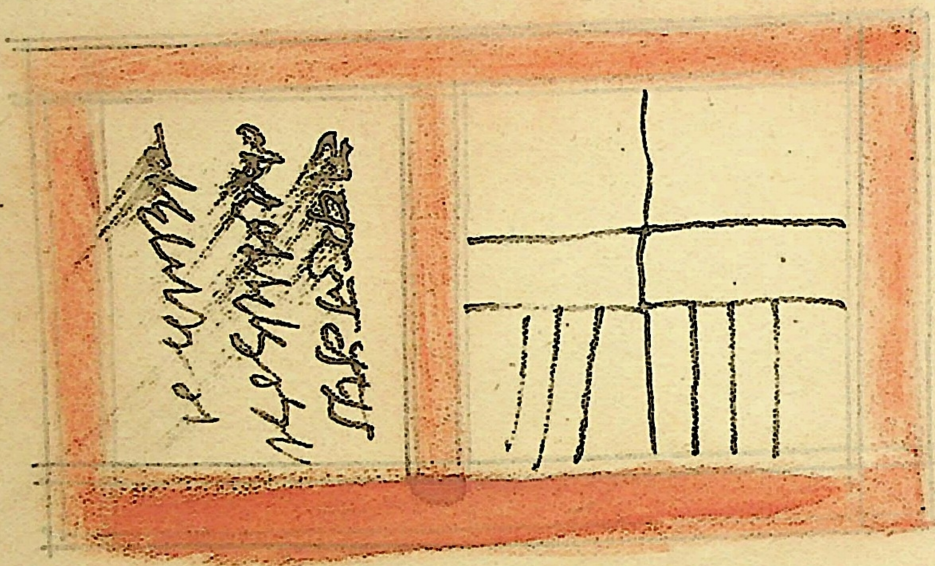


50 समलग्न मे १५ अंश तक चंद्रमा का
होरा फेर सूर्य का होरा। विषमलग्न
72 मे १५ अंश पातक सूर्य का होरा
फेर चंद्रमा का होरा जो चंद्रमा कि
72 होरा हो तो चंद्रमा कि राशी का
लग्न लाना होरा कुंडली मे
जो सूर्य कि होरा हो
तो सूर्य कि राशी का लगन लग
ना होरा कुंडली मे सूर्य चंद्र
कि राशी स्थापन करे
लीमे सब ग्रह स्थाप
रीती से करने समराशी
हो तो सूर्य सब से तरा सर
शी मे स्थापन करना
विषमराशी का होते है
समराशी मे करना



१०मा नवांशक द्वादशांक

३ २०	२ ३०
६ ४०	५
१०	७ ३०
१३ २०	१०
१६ ४०	१२ ३०
२०	१५
२३ २०	१७ ३०
२६ ४०	२०
३०	२२ ३०
७ ३०	२५
५	२७ ३०
२२ ३०	३०
३०	



१० मासे सोना खरा कांसेका दिया

[illegible]

74

[illegible]


75